





## संपादकीय

## निरंतर बढ़ता संकट

भूगर्भ वैज्ञानिकों और डिपार्टमेंट ऑफ फॉरेंसट्री के वरिष्ठ वैज्ञानिकों की मानें तो जोशीमट टूटे हुए पहाड़ों के जिस मलबे पर बसा है वह तेजी से धंस रहा है। अब इसे रोकना संभव नहीं लगता। स्थिति काफी गंभीर है और यहां 50 से अधिक घर एक साथ भी ध्वस्त हो सकते हैं। कई वैज्ञानिकों का मानना है कि जोशीमट ग्लेशियर से आए मलबे पर बसा है, लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्य हैं कि जोशीमट भूस्खलन के मलबे पर बसा है। 1976 में जोशीमट में भूस्खलन की घटनाएं देखी गई थीं।

उत्तराखंड अनियंत्रित और अनियोजित विकास की मार से दरक रहा है और राज्यवासियों के पास चुपचाप आसू बहाने के अलावा कोई चारा नहीं है। जोशीमट में तो इमारतें कराह ही रही हैं अब जो खबरें आ रही हैं वो तो पूरे उत्तराखंड को दहलाने वाली हैं। खबर है कि जोशीमट से 80 किलोमीटर दूर ऋषिकेश -कर्मप्रयाग रेल लाइन की रिटैनिंग वाल में भी दरारों आ गई हैं। कर्मप्रयाग कस्बे के 50 से अधिक घरों में दरारों निवासियों के दिलों में दहशत भर रही हैं। और तो और इससे नितांत अलग रूट पर स्थित मसूरी के लंदौर कस्बे से भी सड़कों पर दरारों की सूचनाएं मिल रही हैं। इससे स्थानीय लोगों में भय और घबराहट है। भूगर्भ वैज्ञानिकों और डिपार्टमेंट ऑफ फॉरेंसट्री के वरिष्ठ वैज्ञानिकों की मानें तो जोशीमट टूटे हुए पहाड़ों के जिस मलबे पर बसा है वह तेजी से धंस रहा है। अब इसे रोकना संभव नहीं लगता। स्थिति काफी गंभीर है और यहां 50 से अधिक घर एक साथ भी ध्वस्त हो सकते हैं। कई वैज्ञानिकों का मानना है कि जोशीमट ग्लेशियर से आए मलबे पर बसा है, लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्य हैं कि जोशीमट भूस्खलन के मलबे पर बसा है। 1976 में जोशीमट में भूस्खलन की घटनाएं देखी गई थीं। तब गढ़वाल कमिश्नर के नेतृत्व में सरकार ने एक कमेटी बनाई थी। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में निर्माण कार्यों पर पूरी तरह से रोक लगाने की सिफारिश की थी। इस रिपोर्ट में सीधे तौर पर बड़ेनिर्माण और ब्लास्टिंग नहीं करने की सलाह दी गई थी। इसके बाद भी यहां पर हाइड्रो पावर और आल वेदर रोड के प्रोजेक्ट को मूर्त रूप दिया गया। जोशीमट केंदरनाथ, बदीनाथ समेत अन्य तीर्थ यात्राओं का एक महत्वपूर्ण गेटवे है। जोशीमट की सड़कों, घर, ऑफिस, मैदान, होटल, स्कूल आदि में

भूमि दरकने के कारण बड़ी-बड़ी दरारें आ गई हैं। जोशीमट में तमाम डेवलपमेंटल गतिविधियां भी रोक दी गई हैं। एक तो मुसीबत की मार दूसरे प्रशासन का बेरुखी भरा रवैया स्थानीय निवासियों को बेबसी के आसू बहाने पर मजबूर कर रहा है। लोगों को न तो नोटिस दिए गए और न उचित मुआवजा लेकिन प्रशासन खतरनाक घोषित होतलों और भवनों को गिराने पर अड़ा है। मंगलवार को स्थानीय लोगों के विरोध के चलते ध्वस्तीकरण नहीं हो सका था। सिर्फ आश्वासनों के भरोसे गुजारा संभव नहीं है। पुनर्वास के लिए फैब्रिकेटेड आवास भी 20 किोमीटर दूर बन रहे हैं। ऐसा करना तो कर्तव्य उचित नहीं है।



## सूक्ति

देश का उद्धार विलासियों द्वारा नहीं हो सकता। उसके लिए सच्चा त्यागी होना आवश्यक है।  
- प्रेमचंद

सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है फिर भी हर एक सत्य ही होगा।  
- स्वामी विवेकानंद

## लॉफिंग जॉन

एक कंजूस व्यक्ति पहली बार डाक्टर के पास गया। डाक्टर के कक्ष के बाहर उसकी फीस का चार्ट लगा था जिस पर लिखा था-पहली बार दिखाने पर सौ रुपये और दूसरी बार दिखाने पर 50 रुपये. उस व्यक्ति ने 50 रुपए बचाने की गरज से डाक्टर से कहा, डाक्टर साहब नमस्कार, दोबारा आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई. जवाब में डाक्टर हल्का सा मुस्करा दिया. उसके बाद डाक्टर ने उसका मुआयना किया. व्यक्ति ने डाक्टर से पूछा कि आखिर मुझे क्या बीमारी है?

‘कुछ खास नहीं, आपको वही है जो मैं पिछले तीन बार से बताता आ रहा हूं.’ डाक्टर ने जवाब दिया.



एक व्यक्ति गोल्फ खेल रहा था और खेलते हुए वह बार-बार दाएं-बाएं मुड़ता, झुकता और कुछ दूढ़ने की कोशिश कर रहा था. उसके साथी खिलाड़ी ने झुंझलाकर पूछा कि आखिर तुम यह क्या कर रहे हो. उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि दरअसल दूर की खिड़की से मेरी बीवी मेरा खेल देख रही है और मैं उससे यह वादा करके आया हूं कि मैं आज एक शानदार शाट लगाकर दिखाऊंगा.

‘बेकार परेशान हो रहे हो. तुम कितनी भी ताकत लगा लो, यहां से शाट मारकर तुम उस खिड़की पर बैठी बीवी को गेंद से नहीं मार सकोगे.’ साथी खिलाड़ी ने जवाब दिया.

## गेम चेंजर होगी गहलोट सरकार की योजनाएं

(लेखक- रमेश सर्राफ धमोरा)

मुख्यमंत्री अशोक गहलोट अपनी सरकार का आखिरी बजट पेश करने की तैयारी कर रहे हैं। इसी साल प्रदेश में विधानसभा के चुनाव होने हैं। इस लिहाज से इस बार के बजट को गहलोट खुद गेम चेंजर मान रहे हैं। मुख्यमंत्री गहलोट कहते हैं कि राजस्थान में इस बार एंटी-इनकम्बेंसी नहीं प्रो-एफिसिपेंसी है। इसी के चलते कांग्रेस प्रदेश का 30 साल पुराना हर बार सत्ता बदलने का इतिहास बदलेगी। सरकारी योजनाओं से जनता बहुत खुश है। इसका सबूत है राजस्थान में हुए नो उपचुनाव जिनमें कांग्रेस ने सात में जीत हासिल की है। गहलोट मानते हैं कि राहुल गांधी के नेतृत्व में राजस्थान में करीब 550 किलोमीटर लम्बी भारत जोड़ो पद यात्रा निकली थी। कहीं पर भी एंटी इनकम्बेंसी जैसा माहौल देखने को नहीं मिला। यह दिखाता है कि प्रदेश की जनता कांग्रेस के साथ है। हमारा फोकस इस चुनाव में पिछली बार से अधिक सीटें लाकर सरकार रिपीट करने का है। गहलोट कहते हैं कि हमारी सरकार ने 2018 के जनघोषणा पत्र के 80 प्रतिशत वादों को पूरा कर लिया है और बाकी पूरे हो रहे हैं। कुछ घोषणाएं ऐसी हैं जिन्हें बिना केंद्र सरकार के सहयोग से पूरा किया जाना संभव नहीं है। हमने 22 लाख किसानों की 14 हजार करोड़ रुपए की कर्ममाफी की है। इसमें राजस्थान सरकार के अंतर्गत आने वाले सभी बैंक शामिल हैं। हर किसान का नाम और राशि जनसूचना पोर्टल पर उलबू है। राष्ट्रीयकृत बैंकों से किसानों के कर्ज का उद्योगपतियों की तरह ही वन टाइम सेटलमेंट करने के लिए पत्र लिख चुके हैं। पर बिना केंद्र सरकार की परमिशन के यह संभव नहीं है। हम स्पष्ट कह चुके हैं कि किसानों का पूरा हिस्सा हम चुकाएंगे। लेकिन केंद्र सरकार हमारे प्रस्ताव को मंजूरी नहीं दे रही है। इन सब के बीच राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि गहलोट सरकार की कुछ ऐसी लोकप्रिय योजनाएं हैं जो आने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए चुनौती बनेंगी। राजस्थान में साढ़े सात लाख सरकारी कर्मचारी हैं। मुख्यमंत्री गहलोट ने प्लान कर दिया है कि पुरानी पेंशन योजना को फिर से लागू किया जायेगा। भाजपा के सामने ये बड़ी चुनौती हो गई है। केंद्र सरकार नहीं चाहती है कि किसी भी हालत में पुरानी पेंशन योजना को फिर से लागू किया जाए। अब जहां गहलोट सरकार के सामने पुरानी पेंशन के लिए बजट जुटाने की चुनौती है। वहीं भाजपा के सामने इस दांव से निपटने की। देश के हर प्रदेश में पुरानी पेंशन योजना लागू करने की मांग उठ रही है। इसी साल मुख्यमंत्री अशोक गहलोट ने राज्य के एक लाख से ज्यादा संविदा कर्मचारियों को स्थायी कर दिया है। कांग्रेस सरकार का ये बड़ा दांव है। भाजपा के सामने गहलोट के इस दांव को काउंटर करने की बड़ी चुनौती है। देशभर में रसोई गैस की कीमतें 1100 रुपये प्रति सिलेंडर पहुंच चुकी हैं। अशोक गहलोट सरकार ने चार साल पूरे होने पर प्लान कर दिया कि बीपीएल कार्ड धारकों और उज्ज्वला गैस योजना के अंतर्गत जिन्हें गैस वृद्धा मिली है। उन्हें 500 रुपये में ही रसोई गैस सिलेंडर दिया जाएगा। इस दायरे में आने वाले लोग सालभर में 12 गैस सिलेंडर सब्सिडी पर ले सकते हैं। इसका फायदा राजस्थान के करीब पांच लाख से ज्यादा परिवारों को मिलेगा। मुफ्त बिजली को लेकर इस समय देश के



कई राज्यों में खूब सियासत हो रही है। राजस्थान सरकार ने पहले से ही इसे लागू कर दिया है। राजस्थान में प्रतिमाह 100 यूनिट बिजली खपत करने वालों को 50 यूनिट बिजली मुफ्त दी जा रही है। 150 यूनिट तक बिजली खपत करने वालों के लिए तीन रुपये प्रति यूनिट और 150 से 300 यूनिट बिजली खपत करने वालों को सरकार की तरफ से दो रुपये प्रति यूनिट की छूट दी जा रही है। प्रदेश में 38.18 लाख घरेलू परिवारों का व 85 लाख किसानों का बिजली बिल शून्य कर दिया गया है। बिजली के लिये सरकार ने 16 हजार करोड़ रुपए का वार्षिक अनुदान दिया है। किसानों को कृषि बिजली कनेक्शनों पर 1000 रुपये प्रति माह का अतिरिक्त अनुदान दिया जा रहा है। आने वाले बजट में बिजली पर अनुदान को और बढ़ाया जा सकता है। राजस्थान सरकार हर साल छात्राओं को मुफ्त स्कूटी बांट रही है। छात्राओं और उनके परिवार के बीच पकड़ बनाने के लिए गहलोट सरकार का ये बड़ा दांव माना जा रहा है। प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना भी चलाई जा रही है। सरकार का दावा है कि वृद्धजन विशेष योग्यजन विधवा और एकल नारी सहित प्रदेश के करीब एक करोड़ लोगों को पेंशन दी जा रही है। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में 10 लाख रुपये तक का निःशुल्क इलाज मिलता है। प्रदेश में अब तक करीब 26 लाख मरीजों को 2963 करोड़ रुपये से निःशुल्क इलाज दिया गया है। आने वाले समय में गहलोट सरकार प्रदेश की 1.35 करोड़ महिलाओं को फी स्मार्टफोन देगी। प्रदेश सरकार के अनुसार राजस्थान में ग्रामीण ओलंपिक दुनिया का सबसे बड़ा खेल आयोजन था जिसमें 30 लाख से ज्यादा लोगों ने भाग लिया था। 26 जनवरी से शहरी ओलंपिक खेलों का शुभारंभ भी होने जा रहा है। बोर्ड परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले 93000 प्रतिभाशाली बच्चों को टेबलेट दिए जाएंगे। इसमें तीन साल तक इंटरनेट फ्री की सुविधा होगी। गहलोट सरकार के अनुसार अब तक 1.32 लाख सरकारी नौकरियों दी गईं। 1.21 लाख सरकारी भर्तियां प्रक्रियाधीन हैं। एक लाख अतिरिक्त पदों पर भर्ती प्रस्तावित है। सरकार का दावा है कि स्कूल और कॉलेज जाने वाली 20000 बालिकाओं को हर साल स्कूटी का वितरण किया जा रहा है। राजीव गांधी

स्कॉलरशिप फॉर एकेडमिक एक्सीलेंस योजना से हर साल 200 बच्चों की विदेश में पढ़ाई का खर्च सरकार उठा रही है। इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना शहरों में 100 दिन के रोजगार मिलने की गारंटी है। सरकार का दावा अब तक करीब साढ़े तीन लाख जॉब कार्ड जारी किए गए हैं। राज्य सरकार मनरेगा में 25 दिन का अतिरिक्त रोजगार दे रही। प्रदेश में 870 इंदिरा रसोइयां खोली जा चुकी हैं। जहां आठ रुपये में गरीब लोगों को पौष्टिक और गुणवत्तापूर्ण भोजन खिलाया जा रहा। राज्य सरकार प्रति थाली 17 रुपये का अनुदान देती है। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि राजस्थान समेत देश के तमाम लोग महंगाई समेत कई तरह की समस्याओं से परेशान हैं। खासतौर पर कोरोना के बाद से लोगों की आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है। नौकरियों का संकट और अलग-अलग तरह की बीमारियों ने लोगों का मनोबल तोड़ दिया है। ऐसे समय सरकार की तरफ से मिलने वाली हर राहत लोगों को अच्छी लगती है। दिल्ली नगर निगम और हिमाचल प्रदेश के नतीजे इस बात के उदाहरण हैं। चुनाव के नजदीक ही सही कांग्रेस ने ये सारे काम करने शुरू कर दिए हैं। ऐसे में अगर कांग्रेस अंदरूनी कलह को सही कर ले तो इन योजनाओं का फायदा आने वाले विधानसभा चुनाव में मिल सकता है। भाजपा के पास इन योजनाओं को काउंटर करने का कोई खास मुद्दा नहीं है।

भाजपा नहीं चाहती है कि पुरानी पेंशन योजना लागू हो। संसद में भाजपा के नेता इसको लेकर बयान दे चुके हैं। इसी तरह संविदा कर्मचारियों को स्थायी करने और सरती बिजली मुहैया कराने जैसे मुद्दे भी भाजपा को परेशान कर सकते हैं। राजस्थान में भाजपा के पास सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा कानून व्यवस्था है। इसके अलावा जातीय समीकरण को भी भाजपा मजबूत बनाने की कोशिश करेगी। यदि चुनावी साल में कांग्रेस अपनी सही राजनीति बनाने में कामयाब रहती है तो उसको फिर जीतने से कोई भी पार्टी नहीं रोक पायेगी।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। इनके लेख देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।)

## कंगाल पाकिस्तान

(लेखक - सनत जैन)

शहबाज सरकार सत्ता संभालने के बाद से कोई भी बड़ी मदद पाकिस्तान के गरीब लोगों को नहीं दे पाई है। खाद्य मुद्रास्फीति में लगातार तेजी देखी जा रही है। खासतौर पर साल 2022 में आई बाढ़ के बाद से खाद्य मुद्रास्फीति की हालत और ज्यादा गंभीर हो गई है। पाकिस्तान में महंगाई किस कदर बढ़ी है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 2022 में दिसंबर में रिकॉर्ड 37.9 फीसदी पर थी। वहीं शहरी इलाकों की बात करें तो सितंबर 2022 पर 30 फीसदी थी जो अक्टूबर में रिकॉर्ड 34.7 फीसदी नवंबर में गिरकर 29.7 फीसदी तो दिसंबर फिर बढ़कर 32.7 पर पहुंच गई। जहां एक तरफ आटा लगातार महंगा होता जा रहा है तो चावल भी कम पीछे नहीं है। पिछले कुछ महीनों में चावल के दाम में लगातार बढ़ोतरी देखने को मिली। इसी वजह से वित्तीय वर्ष 2022-23 में चावल का निर्यात की वर्ष 2021-22 से कम रहने की उम्मीद है। बाढ़ की वजह से धान की फसल बर्बाद हुई। बाढ़ की वजह से पाक में कई तरह की छोटी फसल बर्बाद हो गई जिसका भारी असर सब्जी दाल और सरसों जैसी चीजों पर देखने को मिल रहा है। वैसे तत्काल की स्थितियों के लिए सिर्फ बाढ़ को दोष देना सही नहीं होगा। आसमान छूती महंगाई के लिए सरकार की नीतियां भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। भारत के साथ दुश्मनी धुनाने के लिए पाक शुरू से ही अपने रक्षा बजट में लगातार वृद्धि करता रहा और विकास को हाशिए पर रखता रहा। चाहे जिसकी भी सरकार रही हो उसका रिमोट कंट्रोल पाकिस्तानी सेना के पास ही

रहा है। नतीजतन पाक में भ्रष्टाचार परवाना चढ़ता रहा और वह देश खोखला होता रहा। आज स्थिति यह है कि पाकिस्तान के पास एक माह का भी गुजारा संभव नहीं है। पाकिस्तानी हुक्मरान देश को आर्थिक बर्दाहली से उबारने के लिए सरकारी संपत्ति को बेचने पर विवश हो गए हैं। गैस प्लांट कतर को बेच दिए गए हैं वहीं पाकिस्तान की कई सरकारी संपत्तियों पर चीन ने अपनी गिद्ध दृष्टि जमा रखी है क्योंकि चीन ने पाकिस्तान को गले तक कर्ज में डुबा रखा है। पाकिस्तान के हुक्मरान एक बार फिर सारी दुनिया के सामने भीख का कटोरा लेकर दर दर भटक रहे हैं लेकिन अब उन्हें खैरात भी नहीं मिल रही है। चीन सउदी अरब और यूएई ऐसे देश रहे हैं जो पाक की मदद करते आए हैं लेकिन अब ये तीनों भी अपने हाथ खींच रहे हैं। आखिर कोई किसी को कब तक खैरात बांट सकता है। इधर पाकिस्तान की आवाज आसमान छूती महंगाई से हलाकान हो चुकी है। वहां महंगाई इस कदर बढ़ चुकी है कि लोगों के सामने भूखों मरने की नौबत आ गई है। सड़क छाप होटलों में ही एक रोटी 60 रुपए में मिल रही है। पानी बिजली पेट्रोल एवं गैस की भी किल्लत मची हुई है। अब स्थिति यह है कि डीजल के अभाव में पाकिस्तान में रेलगाड़ियों के पहिए धमने की स्थिति आ गई है। इसके लिए वहां के हुक्मरान जिम्मेदार हैं। कोई और नहीं। श्रीलंका की तरह पाकिस्तान भी कंगाली की कगार पर पहुंच चुका है। लगातार उसका विदेशी मुद्रा भंडार घटता जा रहा है। भारी कर्ज के कारण देश की अर्थव्यवस्था अंतिम सांसे ले रही है। पाकिस्तान की सरकार अन्य देशों से मदद की गुहार लगा रही है मगर अब उसका साथ चीन भी नहीं दे रहा है। विदेशी मुद्रा



भंडार कम होने के कारण देश में आयात बहुत कम हो गया है। इस कारण जरूरत की वस्तुओं की किल्लत देखने को मिल रही है। हाल ही में पाकिस्तान का एक वीडियो वायरल हो रहा था इसमें आम जनता को एक आटे की टुक के पीछे भागते देखा गया। आटे को लेकर आम जनता लाइनों में खड़ी हुई है। यहां पर आटा 160 रुपये किलो तक बिक रहा है। हालात इतने खराब हैं कि आटे को लेने के लिए मारामारी देखने को मिली। पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से भी आस लगाए बैठा है मगर आईएमएफ ने अब तक सहायता को लेकर अपना

रुक साफ नहीं किया है। पाकिस्तान और आईएमएफ के बीच 9वीं समीक्षा बैठक बीते साल अक्टूबर से ही लंबित पड़ी है। यह वार्ता कामयाब न होने के कारण आईएमएफ ने 1.1 अरब डॉलर की लोन की किरते दे से मना कर दिया है। दरअसल पाकिस्तान आईएमएफ की शर्तों पर खरा नहीं उतरा है। आईएमएफ का कहना है कि पाकिस्तान सरकार अपने खर्चों पर ब्रेक लाए आयात पर प्रतिबंध लगाए अतिरिक्त कर को लगाए इसके साथ बिजली के दामों को बढ़ाए। मगर वह यह सब करे तो कैसे। देश की जनता पहले से हलाकान है।

## प्रसंगत: लक्ष्य की तलाश

हुत पुरानी कथा है। एक राजा अपने राजसी दासियों से ऊब गए थे। वह जो भी करते, वेमन से करते। वह चाहे थे कि किसी तरह राजपाट त्याग दें और ईश्वर का साक्षात्कार करें। एक दिन उन्होंने राजसिंहासन अपने उत्तराधिकारी को सौंपा और राजमहल छोड़कर जंगल की ओर चल पड़े। उन्होंने रास्ते में कई विद्वानों के साथ सत्संग किया, कुछ दिनों तक तपस्या की किंतु उनके भीतर अतृप्ति बनी रही। मन में खिन्नता का भाव लिए वह तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। एक दिन चलते-चलते वह काफी थक गए और भूख के कारण निबाल से होने लगे। वह पगडंडी से उतर एक खेत में रुके और एक पेड़ के नीचे बैठ सुस्ताने लगे। उन्हें देख एक किसान उनके पास जा पहुंचा। वह उनका चेहरा देखकर ही समझ गया वह थके होने के साथ भूखे भी हैं। किसान ने हांडी में उबालने के लिए चावल डाले। चावल की हांडी को आग पर चढ़ाकर उसने राजा से कहा, ‘उठो, यह चावल पकाओ, जब चावल पक जाए तब मुझे आवाज दे देना। हम दोनों इससे पेट भर लेंगे।’ राजा मंत्रमुग्ध होकर किसान की बात सुनते रहे। किसान के वहां से जाने के बाद उन्होंने चावल पकाने शुरू कर दिए। जब चावल पक गए, तो उन्होंने किसान को बुलाया और दोनों ने भरपेट चावल खाए। भोजन करने के बाद किसान काम में लग गया और राजा को उंडी छांव में गहरी नींद आ गई। उन्होंने स्वप्न में देखा कि एक दिव्य पुरुष खड़ा होकर कह रहा है, ‘मे कर्म हूँ और मेरा आश्रय पाए बगैर किसी को शांति नहीं मिलती। राजन, तुम भी पुरुषार्थ करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो।’ नींद खुलने पर राजा ने सपने पर विचार किया तब उन्हें कर्म में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिली। वह वापस अपने राज्य लौट गए। उन्होंने जनकल्याण को अपना लक्ष्य बना लिया और उसी में रम गए। इससे उन्हें आत्मिक शांति मिली। उन्हें लगा कि यही वह लक्ष्य था जिसे वह अब तक ढूँढ रहे थे।





## अमीरों की सूची में चौथे नंबर पर खिसके अडानी

**नई दिल्ली ।** भारत और एशिया के सबसे बड़े रईस गौतम अडानी को नए साल पर झटका लगा है। अडानी दुनिया के अमीरों की सूची में चौथे नंबर पर खिसक गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर इंडेक्स के मुताबिक बुधवार को उनकी नेटवर्थ में 91.2 करोड़ डॉलर की गिरावट आई और यह 118 अरब डॉलर रह गई। अमेरिका की दिग्गज ई-कॉमर्स कंपनी ऐमजॉन के फाउंडर जेफ बेजोस अब अमीरों की लिस्ट में उनसे आगे निकल गए हैं। बेजोस की नेटवर्थ में बुधवार को 5.23 अरब डॉलर की तेजी आई और उनकी नेटवर्थ एक झटके में 118 अरब डॉलर पहुंच गई। हालांकि दशमलव के बाद के अंतर को देखा जाए तो बेजोस की नेटवर्थ अडानी से मामूली रूप से ज्यादा है। पिछले साल अडानी की नेटवर्थ में 44 अरब डॉलर का इजाफा हुआ था और वह सबसे ज्यादा कमाई करने वाले अरबपति थे। लेकिन इस साल उनकी नेटवर्थ में अब तक 2.44 अरब डॉलर की गिरावट आई है। जैसे दुनिया के अमीरों की सूची में फ्रांस के कारोबारी बर्नार्ड आर्नॉल्ट 182 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ पहले नंबर पर हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ उनकी नेटवर्थ में 20 अरब डॉलर का इजाफा हुआ है। यानी उन्होंने योजना करीब दो अरब डॉलर कमाए हैं। टेस्ला स्पेसएक्स और ट्विटर के मालिक एलन मस्क 132 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ इस सूची में दूसरे नंबर पर हैं। बुधवार को उनकी नेटवर्थ में 2.78 अरब डॉलर का इजाफा हुआ। जैसे इस साल उनकी नेटवर्थ में अब तक 4.84 अरब डॉलर का नुकसान हुआ है। इस सूची में अमेरिका के दिग्गज इनव्हेस्टर वॉरेन बफेट 111 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ इस लिस्ट में चौथे नंबर पर हैं। माइक्रोसॉफ्ट के फाउंडर बिल गेट्स छठे नंबर पर हैं। एलन मस्क सातवें नंबर पर हैं। फेसबुक की फेडरिका ब्लैकबर्न के सीईओ मार्क जकरबर्ग 50.1 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ इस लिस्ट में 24 वें नंबर पर हैं।

## आईटीपी एजुकेशन ने 4 नए कार्यालयों के शुभारंभ के साथ भारत में अपनी उपस्थिति मजबूत की

**नई दिल्ली ।** अंतरराष्ट्रीय शिक्षा सेवाओं में अग्रणी आईटीपी ने भारतीय छात्रों को उनके विदेशी शिक्षा के सपने को साकार करने में मदद करने के लिए फरवरी तक भारत में चार नए कार्यालय शुरू करने की घोषणा की है। इस विस्तार के साथ, आईटीपी के देश भर में 73 कार्यालय हो जाएंगे, जो अंतरराष्ट्रीय शिक्षा उद्योग में पूरे भारत में अधिकतम भौतिक उपस्थिति के मार्ग पर अग्रसर होगा। कार्यालयों का उद्घाटन दिल्ली (उत्तर), दिल्लीखनगर (हैदराबाद), खजा (पंजाब) और होशियारपुर (पंजाब) में किया जाएगा। विदेशों में अध्ययन की बढ़ती मांग को देखते हुए, आईटीपी ने बड़ी टीमों के साथ गुवाहाटी, जम्मू, कालीकट और त्रिशूर में अपने मौजूदा कार्यालयों को विकसित करने की भी योजना बनाई है। अपनी विश्व स्तरीय काउंसिलिंग और डिजिटल इनोवेशन के साथ, आईटीपी एजुकेशन छात्रों को ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूएस, यूके, न्यूजीलैंड और आयरलैंड जैसे लोकप्रिय देशों में और सर्वोत्तम गंतव्य, कार्यक्रमों और संस्थानों को चुनने, आवेदन और वीजा आवश्यकताओं को पूरा करने, शिक्षा ऋण, स्वास्थ्य बीमा, धन हस्तांतरण सेवाओं, आवास, विदेशी बैंक खाते, सिम कार्ड, आदि के लिए आवेदन करने से लेकर विदेश में संपूर्ण अध्ययन सहायता प्रदान करता है। इस अवसर पर, दक्षिण एशिया और मॉरीशस, आईटीपी एजुकेशन के क्षेत्रीय निदेशक, पीपुष कुमार ने कहा, हमारा उद्देश्य भारत में हर छात्र के विदेश में अध्ययन के सपने को पूरा करना है। इन चार नए कार्यालयों को लॉन्च करना हमारे ग्राहकों के करीब आने और उन्हें बेहतरीन सेवाएं प्रदान करने की दिशा में एक और कदम है। हम सभी अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आवश्यकताओं के लिए एक-स्टॉप समाधान होने पर गर्व करते हैं और अपने ग्राहकों को उनके अध्ययन-विदेश यात्रा के हर चरण में समर्थन करते हैं। अंतरराष्ट्रीय शिक्षा उद्योग तीव्र गति से बढ़ रहा है। 2024 तक लगभग 18 लाख भारतीय छात्रों के विदेश में अध्ययन करने की उम्मीद है, कुल छात्र खर्च 75 अरब डॉलर से अधिक है।

## सैमसंग गैलेक्सी एस23 सीरीज का प्री-ऑर्डर अब भारत में उपलब्ध

**नई दिल्ली । (एजेंसी)**

सैमसंग ने गुरुवार को घोषणा की कि उसकी आगामी फ्लैगशिप सीरीज गैलेक्सी एस23 के लिए प्री-रिजर्वेशन भारत में शुरू हो गया है। टेक दिग्गज ने एक बयान में कहा कि ग्राहक कंपनी की आधिकारिक वेबसाइट, सैमसंग एक्सक्लूसिव स्टोर्स, अमेजन और प्रमुख रिटेल आउटलेट्स पर 1,999 रुपये की टोकन राशि का भुगतान कर नई गैलेक्सी एस सीरीज को प्री-रिजर्व कर सकते हैं। एस23 सीरीज के स्मार्टफोन को प्री-रिजर्व करने वाले उपभोक्ताओं को 5,000 रुपये का लाभ मिलेगा। हालांकि,

इसका फायदा उठाने के लिए उपभोक्ताओं को 31 मार्च से पहले डिवाइस को खरीदकर एक्टिवेट करना होगा। गैलेक्सी अनफैब्ड इंटेल को सैमसंग न्यूजरूम इंडिया या 1 फरवरी रात 11.30 बजे लाइव स्ट्रीम किया जाएगा। कंपनी ने कहा, नई गैलेक्सी एस सीरीज इस बात का प्रतीक होगी कि सैमसंग प्रीमियम अनुभव को कैसे परिभाषित करता है। सैमसंग अपने नए फ्लैगशिप के साथ थका शानदार है इसके लिए नए मानक स्थापित कर रहा है। 2020 की शुरुआत में कोविड-19 महामारी के प्रकोप के बाद यह पहला इन-पर्सन इवेंट होगा। सैमसंग ने कहा, गैलेक्सी इनोवेशन का एक



नया युग आ रहा है। हमारे नवाचार लोगों के लिए अविश्वसनीय संभावनाओं को सक्षम करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।



नई दिल्ली में ऑटो एक्सपो में बीवाय डी ऑटो थ्री कार पेश करती हुई मॉडलस।

## शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

**मुंबई ।**

मुंबई शेयर बाजार गुरुवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही उर्जा पीएसई और बैंकिंग शेयरों में बिकवाली हावी होने के कारण आई है। इसके अलावा एमएमसीजी इंडिया और मेटल इंडेक्स भी नुकसान के साथ ही लाल निशान पर बंद हुए हैं। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 147.47 अंक करीब 0.25 फीसदी की गिरावट के साथ 59958.03 के स्तर पर बंद हुआ है। वहीं 50

शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 37 अंक करीब 0.21 फीसदी नीचे आकर 17858.20 के स्तर पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एस्बीआई लाइफ इश्योरेंस उल्टा ट्रेक सीमेंट लार्सन एंड टूब्रो एचसीएल टेक्नोलॉजीज और डॉ रेड्डी लैबोरेटरीज के शेयर शीर्ष पर रहे जबकि डेविस लैब रिलायंस इंडस्ट्रीज वीपीसीएल एक्सिस बैंक और टाटा मोटर्स के शेयर नीचे आये। टाट कारोबारी सत्र में भी बाहर गिरावट पर बंद हुआ था।

इससे पहले आज सुबह भी बाजार गिरावट पर खुला। बाजार में बीते दो सत्र में रही गिरावट का

असर गुरुवार सुबह भी देखा गया और कारोबार की शुरुआत नुकसान के साथ हुई लेकिन कुछ ही देर बाद निवेशकों का भरोसा वापस लौट आया और वे खरीदारी करने लगे जिससे बाजार में बढ़त दिखने लगी। सेंसेक्स सुबह 23 अंक गिरकर 60083 पर खुला और कारोबार शुरू किया जबकि निफ्टी 25 अंकों की बढ़त बनाकर 17921 पर खुला और कारोबार की शुरुआत हुई। गिरावट पर खुलने के बावजूद निवेशकों का भरोसा वापस आने लौटने पर वे खरीदारी करने लगे निवेशकों ने शुरुआत से ही एचसीएल

टेक्नोलॉजी कोल ई डिया टाइम कं पनी पावर ग्रिड कॉर्प और ग्रे सिम इंडस्ट्रीज जैसी कंपनियों पर दांव लगाया और जमकर खरीदारी की। वहीं ए शियन पेंट एक्सिस बैंक वीपीसीएल और कोटक में हिंदा बैंक जैसी कंपनियों के शेयरों में बिकवाली हो रही है। केवल निफ्टी मेटल और बैंक में ही गिरावट दिख रही इसके अलावा बाकी सभी सेक्टर आज हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं। बाजार पर लगातार दबाव बने होने का सबसे बड़ा कारण विदेशी निवेशकों की ओर से पूंजी की निकासी करना है।

## अमेरिका और कनाडा में अब यूपीआई से कर सकेंगे भुगतान

**नई दिल्ली ।**

अमेरिका और कनाडा में अब दूसरे देशों में रहने वाले भारतीयों (एनआरआई) के लिए यूपीआई से भुगतान शुरू कर दिया गया है।

नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया के मुताबिक एनआरआई अब अपने इंटरनेशनल मोबाइल नंबर के जरिए पेमेंट्स के लिए यूपीआई यानी यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस का उपयोग कर सकेंगे। एनआरआई को यूपीआई के जरिए पेमेंट्स करने के लिए उनके नॉन रेजिडेंट वाले बैंक अकाउंट को यूपीआई से लिंक करना होगा। नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ने भागीदार बैंकों को इसकी तैयारी के लिए 30 अप्रैल तक का समय दिया है। बता दें कि केवल छह वर्षों में यूपीआई के जरिए लेनदेन में भारी उछाल देखने में आया है। दिसंबर माह में 12 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा के लेनदेन यूपीआई के जरिये किए गए। एनआरआई अकाउंट दूसरे देशों में रहने वाले भारतीयों को विदेश से होने वाली कमाई को भारत में ट्रांसफर करने में मदद करता है। जबकि एनआरओ अकाउंट उनकी भारत में होने वाली आय को मैनेज करने में सहायता करता है। यूपीआई के जरिए वे अब सिर्फ इन्हीं अकाउंट से भुगतान कर सकेंगे। शुरुआत में यूपीआई के जरिए भुगतान की सुविधा 10 देशों में रह रहे एनआरआई को मिलेगी। वे अब इंटरनेशनल मोबाइल नंबर का उपयोग करके भी यूपीआई से पेमेंट्स कर पाएंगे। इन देशों में सिंगापुर अमेरिका ऑस्ट्रेलिया कनाडा हांगकॉंग ओमान कतर सऊदी अरब संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ब्रिटेन (यूके) आदि शामिल हैं।



## मिड साइज एसयूवी देगी हुंडई क्रेटा को टक्कर

- 2023 की गर्मियों के दौरान किया जाएगा लॉन्च

**नई दिल्ली ।**

अपनी अपकमिंग मिड साइज एसयूवी का होंडा कार्स इंडिया ने पहला ऑफिशियल स्केच जारी किया है। कंपनी ने कहा है कि इसे भारतीय बाजार में 2023 की गर्मियों के दौरान लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च होने पर यह कार देश में हुंडई क्रेटा को टक्कर देगी। भारत में बड़े स्तर पर सर्वे के बाद होंडा रिसर्च एंड डेवलपमेंट एशिया पैसिफिक कं पनी लिमिटेड में इसको डिजाइन किया गया है। होंडा की नई एसयूवी न केवल हुंडई क्रेटा को टक्कर देगी बल्कि किआ सेल्टोस मारुति सुजुकी ग्रैंड विटारा और टोयोटा हायराइडर के साथ भी लॉन्गरेइस में होगी। एसयूवी के बारे में कुछ डिजाइन विस्दस पहले से ही पता हैं। इसमें ऊपर की ओर एलईडी डीआरएल के साथ चौड़े रैपअराउंड



हेडलैंप के साथ एक अपराइड नेज मिलेगा। सेंट्रल में 'होंडा' लोगो के साथ एक मल्टी-स्लेट फंट ग्रिल होगा। जापानी ब्रांड किआ सेल्टोस की किताब से सीख लेते हुए एक कनेक्टेड डीआरएल थीम पेश कर सकता है। व्हील आर्च पर क्लैडिंग के साथ बड़े-बड़े पहिये होने की उम्मीद की जा सकती है ताकि इसे रफ एंड टफ लुक दिया जा सके। होंडा एसयूवी को पेट्रोल

इंजनों के साथ पेश किए जाने की उम्मीद है। इसमें 1.5 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन और 1.5 लीटर हाइब्रिड इंजन देखने को मिल सकता है। पहले वाला इंजन 5वें जनरेशन की होंडा सिटी से लिया गया है। बाद वाले को सिटी हाइब्रिड से लिया गया है। ट्रांसमिशन विकल्प भी समान होने जा रहे हैं यानी 1.5रू नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन के लिए 5-स्पीड

मैनुअल और सीवीटी ऑटोमैटिक यूनिट और स्ट्रॉंग-हाइब्रिड वर्जन के लिए ई-इंजिन यूनिट मिलेगा। स्केच के अनुसार एसयूवी एचआर-वी के लोबल वर्जन की याद दिलाती है। हालांकि कुछ अपडेट हैं जो इसे एचआर-वी से अलग करते हैं। अपडेटेड अमेज आर्किटेक्चर पर आधारित होंडा की नई एसयूवी की लंबाई लगभग 4.2-4.3 मीटर होगी।

## कच्चा तेल महंगा कई शहरों में पेट्रोल और डीजल की कीमत बढ़ी

- ब्रेट कूड का माव 3 डॉलर बढ़कर 83 डॉलर प्रति बैरल हुआ

**नई दिल्ली । (एजेंसी)**

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में अचानक उछाल दिख रहा है और ब्रेट कूड का भाव करीब 3 डॉलर बढ़कर 83 डॉलर प्रति बैरल के आसपास पहुंच गया है। यूपी से बिहार तक कई शहरों में तेल के दाम बढ़ गए हैं। हालांकि दिल्ली और मुंबई जैसे चारों महानगरों में गुरुवार को भी पेट्रोल-डीजल के भाव स्थिर बने हुए हैं। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार गौतमबुद्ध नगर में पेट्रोल 5 पैसे महंगा होकर 96.65 रुपये प्रति लीटर हो गया है जबकि डीजल 5 पैसे बढ़कर 89.82 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया है। गाजियाबाद में पेट्रोल 32 पैसे महंगा हुआ और 96.58 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया जबकि डीजल 30 पैसे बढ़कर 89.75 रुपये प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 13 पैसे सस्ता हुआ और 96.44 रुपये प्रति लीटर हो गया जबकि डीजल 12 पैसे गिरकर 89.64 रुपये प्रति लीटर है। बिहार की

राजधानी पटना में पेट्रोल के दाम 21 पैसे बढ़कर 107.80 रुपये प्रति लीटर जबकि डीजल 20 पैसे बढ़कर 94.56 रुपये प्रति लीटर हो गया है। कच्चे तेल पिछले 24 घंटे के दौरान बढ़त पर दिखाई दिया। ब्रेट कूड का भाव करीब 3 डॉलर उछाल के साथ 82.90 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। डब्ल्यूटीआई का भाव भी करीब 3 डॉलर बढ़कर 77.64 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। दिल्ली में पेट्रोल 96.65 रुपये और डीजल 89.82 रुपये प्रति लीटर मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76



रुप प्रति लीटर नोएडा में पेट्रोल 96.65 रुपये और डीजल 89.82 रुपये प्रति लीटर है। गाजियाबाद में पेट्रोल 96.58 रुपये और डीजल 89.75 रुपये प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.44 रुपये और डीजल 89.64 रुपये प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 107.80 रुपये और डीजल 94.56 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

## ट्रैफिगुरा ने नायरा एनर्जी में अपनी हिस्सेदारी बेची

**नई दिल्ली ।**

वैश्विक स्तर पर जिस कारोबार से जुड़ी कंपनी ट्रैफिगुरा ने नायरा एनर्जी में अपनी हिस्सेदारी बेच दी है। हालांकि कंपनी ने सीदे की राशि का खुलासा नहीं किया है। मेरटेरा समूह को पूर्व में जेनेरा ग्रुप होल्डिंग के नाम से जाना जाता था। इटली की कंपनी ने विशेष उद्देश्यीय इकाई हारा कैपिटल सॉल के जरिये हिस्सेदारी खरीदी है। ट्रैफिगुरा ने कहा कि उसने नायरा एनर्जी में अपनी 24.5 प्रतिशत हिस्सेदारी हारा कैपिटल सॉल को बेच दी है। नायरा एनर्जी को पूर्व में एस्सार ऑयल के नाम से जाना था। इसे रूस की कंपनी रॉसेनेफ्ट की अनुयायी वाले समूह ने 2017 में खरीदा था। निवेश समूह विशेष उद्देश्यीय इकाई के सानी एंटरप्राइजेज कंपनी लिमिटेड ने 49.13 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की थी। इस समूह में जिनेवा की ट्रैफिगुरा और रूस का निवेश समूह यूनाइटेड कैपिटल पार्टनर्स (यूसीपी) शामिल था। नायरा एनर्जी के पास गुजरात के वडीनार में रिफाइनरी है। इसकी मौजूदा क्षमता दो करोड़ टन सालाना है। उसके पास 6500 से अधिक पेट्रोल पंपों का नेटवर्क है।

## वैगनआर को फरवरी 2022 में किया कंपनी ने अपडेट

-कीमत 5.47 लाख से 7.20 लाख रुपए के बीच

**नई दिल्ली । (एजेंसी)**

जानी-मानी कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ने वैगनआर को फरवरी 2022 में मांगूली अपडेट किया था। वर्तमान में इसकी कीमत 5.47 लाख रुपये से 7.20 लाख (एक्स-शोरूम) के बीच है। इसकी लगातार बिक्री के चलते वैगनआर 2022 सीवाय में देश में सबसे अधिक बिकने वाली पैसेंजर कार बन गई है क्योंकि इसने पिछले साल से 221850 यूनिट्स हो चुकी हैं और यह भारत में एकमात्र कार रही जिसकी दो लाख से ज्यादा यूनिट्स सेल हुईं। पहली बार 1999 में पेश की गई वैगन आर वर्तमान में अपनी थर्ड जेनरेशन में है। 2019 में फॉर्मल राइडिंग हैचबैक को नए प्लेटफॉर्म एकदम नए डिजाइन और ज्यादा जगह वाले इंटीरियर के साथ सबसे बड़ा अपडेट मिला। वैगनआर की लगभग 3 मिलियन यूनिट्स पहले से ही सड़कों पर हैं - जो इसे भारत में अब तक की सबसे सफल कारों में से एक बनाती है। 5-सीटर नियमित पेट्रोल और सीएनजी वैरिएंट में आता है जबकि टूर-स्पेसिफिक मॉडल भी उपलब्ध है। यह डुअलजेट डुअल वीवीटी तकनीक के साथ 1.0-लीटर तीन-सिलेंडर पेट्रोल है।



1.2-लीटर 4-सिलेंडर पेट्रोल इंजन से शक्ति प्राप्त करता है और बेहतर फ्यूअल कंजमेशन के लिए एकराइड स्टार्ट/स्टॉप सिस्टम है। छोटे 1.0-लीटर इंजन से 25.19 केएमपीएल का तगड़ा माइलेज मिलता है। 1.2-लीटर के सीरीज डुअलजेट डुअल वीवीटी इंजन की दावा की गई फ्यूअल एफिसिएंसी 24.43 केएमपीएल है। मारुति सुजुकी वैगनआर में नेविगेशन के साथ एक डी स्मार्टप्ले स्टूडियो टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम क्लाउड-आधारित सेवाएं डुअल फंट एयरबैग बीबीडी के साथ एबीएस रिवर्स पार्किंग सेंसर एएमटी में हिल-होल्ड असिस्ट चार स्पीकर स्टीयरिंग व्हील शामिल हैं। माउंटेड कंट्रोल के साथ एक सी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर वगैरह। टूर एच3 विशेष रूप से पेट्रोल और एस-सीएनजी संस्करणों में सेल किया जाता है। इस कार का सीएनजी संस्करण (एलएक्सआई और वीएक्सआई टिप्स में उपलब्ध) में 34.05 किमी/किग्रा है।

## फार्मर्स फील्ड स्कूल में यूपी के किसान सीख रहे प्राकृतिक खेती का हुनर

लखनऊ। यूपी में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार तेजी से बढ़ रही है। इसी संदर्भ में फार्मर्स फील्ड स्कूल में इस खेती का हुनर सीख रहे हैं। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुसार कृषि विभाग ने इस पर काम करना भी शुरू कर दिया है। इस क्रम में अब तक करीब 10 हजार किसानों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि केन्द्र द्वारा जारी नेशनल मिशन ऑन नैचुरल फार्मिंग योजना के तहत प्रदेश के 49 जिलों में 85710 हेक्टेयर में प्राकृतिक खेती कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसमें 1714 क्लस्टर गठित कर फार्मर्स फील्ड स्कूल कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसी प्रकार राज्य सेक्टर से बुन्देलखंड के समस्त जिलों ( बांदा, हमीरपुर, ललितपुर, जालौन, झांसी, महोबा) में 470 क्लस्टरों ( 23500 हेक्टेयर) में दो चरणों में प्राकृतिक खेती कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 में 235 क्लस्टर गठित कर फार्मर्स फील्ड स्कूल के आयोजन का कार्यक्रम वर्तमान में संचालित है। दोनों योजनाओं अन्तर्गत फार्मर्स फील्ड स्कूल संचालन में कुल 93369 कृषक

प्रतिभाग कर रहे हैं। कृषि विशेषज्ञों की मानें तो रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग से हमारी धरती बाढ़ हो रही है। अब अधिक खाद डालने पर भी अपेक्षित पैदावार नहीं हो रही। इसी तरह फसलों को कीटों एवं रोगों से बचाने के लिए जिन जहरीले रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है उनके प्रति रोग एवं कीट क्रमशः प्रतिरोधी होते जा रहे हैं। लिहाजा हर कुछ साल बाद और जहरीले एवं महंगे कीटनाशकों की जरूरत पड़ रही है। इन दोनों के प्रयोग से किसानों की लागत जरूर बढ़ती जा रही है। जल, जमीन एवं जलवायु के प्राकृतिक संतुलन को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक खेती का प्रयोग हो रहा है। साथ ही यहाँ इनकी संभावनाओं भी अधिक हैं। खेती किसानों के विशेषज्ञ गिरीश पांडेय ने बताया कि कृषि एवं पर्यटन आदि को शामिल कर लें तो देश की जीडीपी में इस क्षेत्र का योगदान करीब 40 फीसद है। देश के भौगोलिक रकबे का मात्र 11 फीसद होने के बाद अगर उत्तर प्रदेश कुल पैदा होने वाले अनाज का 20 फीसद पैदा करता है तो इसकी वजह इंडो गैजेटिक बेल्ट की वह जमीन है जिसका शुमार तुनिया की सबसे उर्वर भूमि में होता है।





## भारतीय टीम ने मनाया कोच द्रविड़ का 50वां जन्मदिन

कोलकाता। दूसरा एकदिवसीय क्रिकेट मैच खेलने कोलकाता पहुंची भारतीय टीम ने अपने मुख्य कोच मुझे राहुल द्रविड़ का 50वां जन्मदिन यहां उत्साह के साथ केक काटकर मनाया। इस अवसर पर द्रविड़ को क्रिकेट प्रशंसकों के साथ ही साथी खिलाड़ियों ने भी बधाई दी। द्रविड़ बुधवार को जैसे ही होटल पहुंचे टीम के सदस्यों ने उन्हें बधाई दी और जमकर जश्न मनाया। टीम ने पहले से ही होटल में द्रविड़ के जन्मदिन को मनाने का इंतजाम कर रखा था। बीसीसीआई के आधिकारिक ने भी ट्विटर हैंडल पर द्रविड़ की बर्थडे पार्टी का एक वीडियो भी साझा किया है। इस वीडियो में देखा जा सकता है कि टीम इंडिया गुवाहाटी से निकलने के बाद कोलकाता के अपने होटल में पहुंची। यहां पहुंचते ही सबसे पहले द्रविड़ के जन्मदिन का केक काटा गया। सभी खिलाड़ी अपने सूटकेस के साथ इस वीडियो में देखे जा सकते हैं। वहीं द्रविड़ इस दौरान टीम के प्यार से उत्साहित दिखे और उन्होंने केक काटकर उसे सभी साथियों के साथ साझा किया।



# कलाकार सुदर्शन पटनायक ने रेत से हॉकी मैदान बनाया

भुवनेश्वर, (एजेंसी)।

उड़ीसा के भुवनेश्वर में शुक्रवार से शुरू हो रहे विश्वकप हॉकी को लेकर लोगों में जबर्दस्त उत्साह है। विश्वकप मैच कलिंगा स्टेडियम और राऊरकेला के बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में खेले जाएंगे। इसका उद्घाटन मैच भुवनेश्वर में शुक्रवार को अर्जेंटीना और दक्षिण अफ्रीका के बीच होगा जबकि फाइनल मुकाबला 29 जनवरी को भुवनेश्वर में खेला जाएगा। इस टूर्नामेंट को देखते हुए हॉकी प्रशंसक भी सक्रिय हो गए हैं।

रेत कलाकार सुदर्शन पटनायक ने कटक में महानदी के तट पर रेत से हॉकी मैदान की तस्वीर उकेरी। इसके साथ ही इसमें सभी देशों के झंडे लगाने के साथ ही 5 हजार गेंदों का भी इस्तेमाल किया गया है। इसे बनाने में 16 लोग लगे और दो दिन का समय लगा। एक लघु कलाकार सत्यनारायण महाराणा ने 30 मिनट के अंदर ही नक्काशी और पेंटिंग के साथ-साथ दो छोटी हॉकी स्टिक बना दी। इसमें एक स्टिक की ऊंचाई 5 मिलीमीटर और चौड़ाई 1 मिलीमीटर है तो दूसरी की ऊंचाई 1 सेंमी. और चौड़ाई 1 मि.मी. है। वहीं ओडिशा के कलाकार एल ईश्वर राव ने 750 मिलीलीटर की एक बोतल के भीतर हॉकी स्टिक और गेंद की लघु कलाकृति बनाई है। राव ने कहा कि पैसिल की नोक से उन्हें यह कलाकृति उकेरने में 10 दिन का समय लगा। उड़ीसा सरकार ने ओली को राज्य में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए आधिकारिक शुभंकर बनाया है। ओली समुद्री कछुए हैं

ज्यादा गोल करने वाली टीमों में पाकिस्तान 235 नीदरलैंड 267 जबकि 300 सौ से अधिक गोल का रिकार्ड केवल एक टीम ऑस्ट्रेलिया के नाम है। ऑस्ट्रेलिया ने 305 गोल किये हैं। पाक टीम इस बार क्वालीफाई नहीं कर पाने के कारण विश्वकप का हिस्सा नहीं है।



लिए आधिकारिक शुभंकर बनाया है। ओली समुद्री कछुए हैं

## विश्व के नंबर एक खिलाड़ी अलकाराज 2023 सत्र की शुरूआत अर्जेंटीना ओपन से करेंगे

नई दिल्ली, (एजेंसी)

विश्व के नंबर एक टेनिस खिलाड़ी स्पेन के कार्लोस अलकाराज 2023 सत्र की शुरूआत ब्यूनस आयर्स में अर्जेंटीना ओपन से करेंगे जो 11 फरवरी से खेला जाएगा। टूर्नामेंट आयोजकों ने ट्विटर पर यह घोषणा की। अर्जेंटीना ओपन के आयोजकों ने बुधवार को ट्विटर पर कहा, नंबर एक खिलाड़ी अर्जेंटीना में खेलेंगे। 19 वर्षीय स्पेन के खिलाड़ी पहली बार हमारे टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे। अलकाराज को ट्रेनिंग में दाएं पैर की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन से हटना पड़ा था। सत्र के पहले ग्रैंड स्लैम से हटने के कारण अलकाराज अपनी नंबर एक रैंकिंग गंवा सकते हैं लेकिन यह ऑस्ट्रेलियन ओपन के परिणाम पर निर्भर करेगा। नोवाक जोकोविच, कैसर रुड और स्टेफानोस सितसिपास नंबर वन बनने की होड़ में हैं। अलकाराज के साथ अर्जेंटीना ओपन में



इटली के लोरेंजो मुसेटी, ऑस्ट्रिया के डोमिनिक थिएम, ब्रिटेन के कैमरून नोरी और स्थानीय हीरो डिएगो श्वार्जमैन जुड़ेंगे। सत्र के पहले ग्रैंड स्लैम से हटने के कारण अलकाराज अपनी नंबर एक रैंकिंग गंवा सकते हैं लेकिन यह ऑस्ट्रेलियन ओपन के परिणाम पर निर्भर करेगा। नोवाक जोकोविच, कैसर रुड और स्टेफानोस सितसिपास नंबर वन बनने की होड़ में हैं।



## एडिलेड इंटरनेशनल 2: खाचानोव को हराकर ड्रेपर सेमीफाइनल में

एडिलेड, (एजेंसी)

जैक ड्रेपर ने कारेन खाचानोव को गुरुवार को लगातार सेटों में 6-4, 7-6(3) से हराकर एडिलेड इंटरनेशनल 2 के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। खाचानोव ने एडिलेड से सात दिन पहले ड्रेपर को हराया था लेकिन 21 वर्षीय ब्रिटिश खिलाड़ी ड्रेपर ने उस हार का बदला चुका लिया और पिछले छह महीने में अपने तीसरे एटीपी सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। 20 वर्षीय ड्रेपर का सेमीफाइनल में स्वीडन के माइकल यार या दक्षिण कोरिया के सून-क्रो क्रोन से मुकाबला होगा। खाचानोव ने एडिलेड से सात दिन पहले ड्रेपर को हराया था लेकिन 21 वर्षीय ब्रिटिश खिलाड़ी ड्रेपर ने उस हार का बदला चुका लिया और पिछले छह महीने में अपने तीसरे एटीपी सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया।

## हॉकी विश्वकप में 200 गोल का आंकड़ा हासिल करने उतरेगी भारतीय टीम

तीन टीमों के नाम है 200 से अधिक एक टीम के नाम हैं 300 से ज्यादा गोल

नई दिल्ली, (एजेंसी)।

उड़ीसा में शुक्रवार से शुरू हो रहे विश्वकप हॉकी मुकाबले भुवनेश्वर और राऊरकेला में खेले जाएंगे। इसमें भारतीय टीम के पास अपने 200 गोल करने का अवसर होगा। अब तक हुए विश्वकप के 14 सत्र के 605 मुकाबलों में 2433 गोल हुए हैं। विश्वकप में अब केवल तीन टीमों ने ही 200 से अधिक गोल किये हैं। भारतीय टीम ने अब तक 199 जबकि स्पेन ने 176 गोल किये हैं। भारतीय टीम का अपना पहला मुकाबला स्पेन से है जिसमें भारतीय टीम गोल करने के मामले में 200 का आंकड़ा हासिल करना चाहेगी। 200 सौ से

भारतीय टीम ने अब तक के विश्वकप के 95 मैचों में 199 किये हैं। भारतीय टीम विश्व रैंकिंग में छठे स्थान पर भारतीय टीम ने अब तक केवल एक बाहर ही 1975 में विश्वकप जीता है। इस बार भारतीय टीम जीत की प्रबल दावेदार मानी जा रही है। हाल में

भारतीय टीम ने जिस प्रकार ऑस्ट्रेलिया को टक्कर दी थी उससे उसकी शानदार लय का पता चलता है।



तीन बार की विश्वकप विजेता इस डच टीम के नाम विश्व कप में 100 मैच खेलने वाली एकमात्र टीम होने का रिकार्ड है। नीदरलैंड ने 100 मैचों में 267 गोल किए हैं। पॉल लिटजेस 25 व्यक्तिगत गोलों के साथ इस टूर्नामेंट में भी सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी हैं। इस बार भी टीम विश्वकप की प्रबल दावेदार के तौर पर उतरेगी

ऑस्ट्रेलिया :

विश्व कप में 300 से अधिक गोल करने वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम भी तीन बार की विश्वकप विजेता है। ऑस्ट्रेलिया ने 92 मुकाबलों में सबसे ज्यादा 305 गोल दागे हैं। ऑस्ट्रेलिया का जीत प्रतिशत भी 75 है जोकि सबसे ज्यादा है। इस बार भी वह खिताब की प्रबल दावेदार मानी जा रही है।



संक्षिप्त समाचार

## बैडमिंटन: इंडिया ओपन 2023 ने इवेंट के निर्माण में अपना नया पार्टनर चुना

नई दिल्ली में 17 से 22 जनवरी तक आयोजित होने वाले इंडिया ओपन 2023 बैडमिंटन टूर्नामेंट ने आधिकारिक पार्टनर भागीदार के रूप में भारत की अग्रणी मल्टीप्लेक्स श्रृंखला, आईनॉक्स लीजर लिमिटेड के साथ करार किया है। इसकी घोषणा यहां गुरुवार को की गई। केडी जाधव इंडोर हॉल, आईजी स्टेडियम, नई दिल्ली में खेला जाने वाला योनेक्स स्नराइज इंडिया ओपन 2023, भारत में अब तक का सबसे बड़ा पेशेवर बैडमिंटन टूर्नामेंट होगा और इसमें कुछ शीर्ष अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भाग लेंगे। साझेदारी के तहत, आईनॉक्स भारत में अपने सिनेमाघरों और अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर टूर्नामेंट का प्रचार करेगा। आईनॉक्स टूर्नामेंट के प्रचार के लिए सिनेमा लॉबी और एलईडी डिस्प्ले में भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआर) को भी जगह उपलब्ध कराएगा। केडी जाधव इंडोर हॉल, आईजी स्टेडियम, नई दिल्ली में खेला जाने वाला योनेक्स स्नराइज इंडिया ओपन 2023, भारत में अब तक का सबसे बड़ा पेशेवर बैडमिंटन टूर्नामेंट होगा और इसमें कुछ शीर्ष अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भाग लेंगे।

## राजस्थान रॉयल्स के प्रशंसक एसए20 में फरेरा के प्रदर्शन से खुश होंगे : आरपी सिंह

नई दिल्ली। एसए20 के रोमांचक मुकाबले में, विकेट टकीपर-बल्लेबाज डोनोवन फरेरा के शानदार प्रदर्शन की बदौलत जोबर्ग सुपर किंग्स ने डरबन के सुपर जायंट्स को 16 रनों से हरा दिया। दिसंबर 2022 में आईपीएल 2023 फिनि प्लेयर नीलामी में राजस्थान रॉयल्स द्वारा 50 लाख में खरीदे गए फरेरा ने 40 गेंदों में 82 रन बनाए। फरेरा ने जोबर्ग सुपर किंग्स के 27/4 पर सिमटने के बाद पांच छक्के और आठ चौके लगाए। उनकी धमकाकर पारी ने सुपर किंग्स को प्रतिस्पर्धी स्कोर 190/6 तक पहुंचा दिया। फरेरा ने अपने करियर में अब तक 27 टी20 मैच खेले हैं और 158 से अधिक की प्रभावशाली स्ट्राइक रेट के साथ 621 रन बनाए हैं। भारत के पूर्व बाएं हाथ के तेज गेंदबाज आरपी सिंह ने बताया कि आईपीएल 2023 में फरेरा को खरीदना राजस्थान रॉयल्स के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। उन्होंने वायकॉम18 के हवाले से कहा, रॉयल्स के प्रशंसक फरेरा के साथ खुश होंगे। वह टीम में बहुत विविधता लाते हैं और अच्छी तरह से क्षेत्ररक्षण करते हैं। हालांकि उन्होंने एक कैच छोड़ दिया था। लेकिन बल्लेबाजी दौरान उन्होंने बड़े शॉट खेले और दबाव को अच्छी तरह से झेला। (रोमारियो) शेफर्ड के साथ साझेदारी मैच का टर्निंग पॉइंट थी। उन्होंने वायकॉम18 के हवाले से कहा, रॉयल्स के प्रशंसक फरेरा के साथ खुश होंगे। वह टीम में बहुत विविधता लाते हैं और अच्छी तरह से क्षेत्ररक्षण करते हैं। हालांकि उन्होंने एक कैच छोड़ दिया था। लेकिन बल्लेबाजी दौरान उन्होंने बड़े शॉट खेले और दबाव को अच्छी तरह से झेला। (रोमारियो) शेफर्ड के साथ साझेदारी मैच का टर्निंग पॉइंट थी।



## ऑस्ट्रेलियन ओपन: स्वीयाटेक का पहला मुकाबला नीमिथर से

मेलबर्न, (एजेंसी)

विश्व की पहले नंबर की खिलाड़ी पोलैंड की इगा स्वीयाटेक का वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन में शुरूआती मुकाबला जर्मनी की जूल नीमिथर से होगा जबकि दूसरी सीड ट्यूनीशिया की ओस जाबौर का मुकाबला स्लोवेनिया की तमारा जिदानसेक से होगा। गुरुवार को निकाले गए ड्रा के अनुसार स्वीयाटेक, अमेरिका की जेसिका पेगुला और कोको गॉफ ड्रा के टॉप हाफ में हैं जबकि दूसरी सीड जाबौर, चौथी सीड फ्रांस की कैरोलिना गार्सिया और पांचवीं

सीड बेलाारूस की आर्यना सवालेंका निचले हाफ में हैं। स्वीयाटेक को हाल में पेगुला के हाथों यूनाइटेड कप में लगातार सेटों में हार का सामना करना पड़ा था। पेगुला ने अमेरिका को पहले यूनाइटेड कप में खिताबी जीत दिलाई थी। सातवीं सीड कोको गॉफ अपने अभियान की शुरूआत चेक गणराज्य की कैटरीना सिनियकोवा के खिलाफ मुकाबले से करेंगी। उनका दूसरे दौर में 2021 की यूएस ओपन चैंपियन एमा रादुकानू और क्वार्टरफाइनल में स्वीयाटेक से मुकाबला हो सकता है। जाबौर ड्रा के निचले हाफ में चौथी सीड कैरोलिना गार्सिया, नंबर

पांच आर्यना सवालेंका और नंबर आठ डारिया कसाकिना के साथ हैं। जाबौर पिछले वर्ष चोट के कारण ऑस्ट्रेलियन ओपन में नहीं खेल पायी थीं। सातवीं सीड कोको गॉफ अपने अभियान की शुरूआत चेक गणराज्य की कैटरीना सिनियकोवा के खिलाफ मुकाबले से करेंगी। उनका दूसरे दौर में 2021 की यूएस ओपन चैंपियन एमा रादुकानू और क्वार्टरफाइनल में स्वीयाटेक से मुकाबला हो सकता है।



## आर्थर ने पाक क्रिकेट टीम का कोच बनने से इंकार किया

कराची। दक्षिण अफ्रीका के मिक्की आर्थर ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम का कोच बनने से इंकार कर दिया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने आर्थर को कोच बनने का प्रस्ताव दिया था पर आर्थर तैयार नहीं हुए। इससे पीसीबी को करारा झटका लगा है और उसकी कोच की तलाश का सिलसिला लंबा होता जा रहा है। इससे पहले पीसीबी ने कहा कि मुख्य कोच के पद के लिए वह दक्षिण अफ्रीका के आर्थर से बात कर रहे थे पर उन्होंने कहा कि काउंटी टीम डर्बीशर के साथ अनुबंध के कारण वह कोच नहीं बन सकते। पीसीबी ने कहा 'उनका डर्बीशर के साथ दीर्घकालिन अनुबंध है। हमने उनसे सलाहकार के तौर पर काम करने के लिए भी कहा पर विभिन्न कारणों से यह संभव नहीं हो सका। वहीं कहा जा रहा है कि आर्थर इसलिए पाक कोच नहीं बनना चाहते क्योंकि उन्हें पाकिस्तान क्रिकेट के माहौल पर भरोसा नहीं है। इसका कारण यह है कि बोर्ड के साथ उनका पुराना अनुभव अच्छा नहीं रहा था। विश्व कप 2019 के दौरान पीसीबी प्रबंधन ने उनसे कहा था कि उनका अनुबंध बढ़ाया जाएगा पर पाक टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने के बाद भी ऐसा नहीं किया गया।

## मलेशिया ओपन: प्रणय क्वार्टर फाइनल में, तृसा-गायत्री दूसरे दौर में हारी

कुआलालम्पुर, (एजेंसी)

सोजन की अपनी विजयी शुरूआत को जारी रखते हुए एचएस प्रणय गुरुवार को मलेशिया ओपन सुपर 1000 बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए, जबकि राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता तृसा जॉली और गायत्री गोपीचंद गुरुवार को यहां महिला युगल के क्वार्टर फाइनल में बुल्गारिया की गैब्रिएला स्टेवला और स्टेफनी स्टेवला से हार गईं। एक्सियाटा एरिना के कोर्ट 1 पर खेलते हुए, वर्ल्ड नंबर 8 प्रणय ने एक घंटे से अधिक के मैच में 19वीं रैंकिंग के चिको आरा ड्वी वाडोयों पर 21-9, 15-21, 21-16 से जीत दर्ज की और हेड टू हेड में इंडोनेशियाई के रिकार्ड के बराबरी की। इससे पहले, दिन में तृसा जॉली और गायत्री गोपीचंद महिला युगल राउंड-आफ-16 मैच में बुल्गारिया की गैब्रिएला और स्टेफनी से 13-21, 21-15, 17-21 से हारकर बाहर हो गयीं। एक्सियाटा एरिना के कोर्ट 1 पर खेलते हुए, वर्ल्ड नंबर 8 प्रणय ने एक घंटे से अधिक के मैच में 19वीं रैंकिंग के चिको आरा ड्वी वाडोयों पर 21-9, 15-21, 21-16 से जीत दर्ज की और हेड टू हेड में इंडोनेशियाई के रिकार्ड के बराबरी की।



## ऑस्ट्रेलियन ओपन: नडाल को मुश्किल ड्रा मिला

मेलबर्न। विश्व के नंबर दो खिलाड़ी और शीर्ष वरीयता प्राप्त स्पेन के राफेल नडाल को वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन में मुश्किल ड्रा मिला है और मेलबर्न पार्क में उनका पहला मुकाबला ब्रिटेन के इन-फॉर्म खिलाड़ी स्कॉट ड्रेपर से होगा। नडाल 22 ग्रैंड स्लैम खिताबों के साथ टेनिस इतिहास के सबसे सफल खिलाड़ी हैं। 2021 के विजेता और 21 ग्रैंड स्लैम जीतने वाले जोकोविच और ऑस्ट्रेलिया की निक किर्गियोस ड्रा के निचले हाफ में उसी क्वार्टर में हैं और उनका क्वार्टरफाइनल में मुकाबला हो सकता है। गत चैंपियन नडाल को हाल में अपने फॉर्म से संघर्ष करना पड़ा था और

यूनाइटेड कप में वह ड्रेपर के हमवतन कैमरून नोरी से हार गए थे जिससे स्पेन यूनाइटेड कप में आगे नहीं जा पाया था। यदि नडाल ब्रिटिश स्टार के रूप में हल्की बाधा पार कर जाते हैं तो दूसरे राउंड में उनका मुकाबला अमेरिका के मैकेजी मैक्डोनाल्ड या ब्रेंडन नाकाशिमा में से किसी एक से होगा। नडाल के क्वार्टर में सातवीं सीड दानिल मेदवेदेव हैं। पिछले वर्ष यूएस ओपन में नडाल को हराने वाले 16वीं सीड फासिस नियाफो चौथे दौर में नडाल के प्रतिद्वंद्वी हो सकते हैं। ड्रा के निचले हाफ में नौ बार के ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन और ऑस्ट्रेलिया के निक किर्गियोस भी उसी

क्वार्टर में हैं। 19वीं सीड किर्गियोस का तीसरे दौर में नौवीं सीड होल्गर रुने से और चौथे राउंड में पांचवीं सीड आंद्रेई रुबलेव से मुकाबला हो सकता है। वह क्वार्टरफाइनल में जोकोविच से भिड़ सकते हैं। जोकोविच अपने अभियान की शुरूआत स्पेन के रॉबर्टे कार्वालेस बायेना के खिलाफ मुकाबले से करेंगे। रुबलेव और पहले राउंड में भिड़त पूर्व नंबर तीन को 2020 के ऑस्ट्रेलियन ओपन फाइनलिस्ट डोमिनिक थिएम से होगी। 13वीं सीड मातियो बेरेटिनी अपनी शुरूआत पूर्व नंबर

एक एंड्री मरे के खिलाफ मुकाबले से करेंगे। ड्रा के निचले हाफ में नौ बार के ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन और ऑस्ट्रेलिया के निक किर्गियोस भी उसी क्वार्टर में हैं। 19वीं सीड किर्गियोस का तीसरे दौर में नौवीं सीड होल्गर रुने से और चौथे राउंड में पांचवीं सीड आंद्रेई रुबलेव से मुकाबला हो सकता है। वह क्वार्टरफाइनल में जोकोविच से भिड़ सकते हैं। जोकोविच अपने अभियान की शुरूआत स्पेन के रॉबर्टे कार्वालेस बायेना के खिलाफ मुकाबले से करेंगे।



रियाद में स्पेनिश सुपर कप फुटबॉल में खेलते हुए वेनेशिया और रियल मैड्रिड के खिलाड़ी।



# रोजाना एक्सरसाइज बिगाड़ सकती है सेहत सेहतमंद बने रहने के लिए हफ्ते में एक दिन का जरूर लें ब्रेक



वजन घटाना हो या फिर टाइप-2 डायबिटीज और हृदयरोग को दूर रखना हो, विशेषज्ञ खानपान पर ध्यान देने के साथ-साथ व्यायाम के लिए भी समय निकालने की सलाह देते हैं। हालांकि, अमेरिकी फिटनेस फर्म 'एलआईटी मेथड' की मानें तो जिम में रोज-रोज पसीना बहाने से फायदा कम और नुकसान ज्यादा हो सकता है। शोधकर्ताओं ने दो हजार लोगों पर अध्ययन के बाद हफ्ते में कम से कम एक दिन एक्सरसाइज से ब्रेक जरूर लेने की सलाह दी है।



लोहे की कड़ाही  
आयरन की कमी पूरी करने के लिए बनाते हैं लोहे की कड़ाही में खाना?

भूलकर भी न पकाएं ये चीजें

आयरन की कमी दूर करने के लिए लोग अक्सर लोहे से बने बर्तनों में भोजन पकाते हैं। लोहे के बर्तनों में खाना बनाकर खाने से सेहत को कई लाभ मिलते हैं। एक वयस्क महिला को रोजाना 18 mg आयरन की जरूरत होती है जबकि चार महीने तक नियमित रूप से लोहे के बर्तन में पका खाना बच्चों को दिया जाए तो उनके हीमोग्लोबिन स्तर को भी सुधारा जा सकता है। लोहे के बर्तनों में पके खाने के बेशुमार फायदों के बावजूद क्या आप जानते हैं खाना बनाते समय इन बर्तनों का सही तरह से इस्तेमाल न करने पर आप सेहत से जुड़ी बड़ी मुसीबत में पड़ सकते हैं। जानते हैं भोजन पकाने के लिए लोहे के बर्तनों का इस्तेमाल करने से पहले वौ कौन सी बातें हैं जिन्हें ध्यान में रखना बेहद जरूरी है।

खट्टी या एसिड से जुड़ी चीजें भूलकर भी लोहे के बर्तन में न पकाएं। ऐसे भोजन लोहे के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं, जिससे भोजन में धातु जैसा अप्रिय स्वाद पैदा हो सकता है। यही वजह है कि कढ़ी, रसम, सांभर या फिर टमाटर से बने वाली तरी को स्टेनलेस स्टील के बर्तनों में ही पकाने की सलाह दी जाती है। लोहे की कड़ाही में बनी हरी सब्जियों में जल्द कालापन आ जाता है। ऐसा उसमें मौजूद आयरन और लोह तत्व की वजह से होता है। जो सेहत के लिए सही नहीं है। सब्जियों के काले होने की दो वजह होती हैं या तो बर्तन अच्छे से साफ नहीं हुआ है या फिर आपने खाना पकाने के बाद उसे लोहे के बर्तन में ही छोड़ दिया है। ऐसा बिल्कुल न करें। लोहे के बर्तनों में पकाया हुआ भोजन तुरंत किसी अन्य बर्तन विशेषकर कांच या तामचीनी (इनमल) के बर्तन में पलट दें।

रोजाना लोहे के बर्तनों में खाना पकाना सही नहीं है। सप्ताह में केवल दो से तीन बार ही इनमें खाना बनाएं। लोहे के बर्तनों को धोने के लिए हल्के डिटरजेंट का इस्तेमाल करें। इन बर्तनों को धोते ही तुरंत किसी कपड़े से पोंछ दें। ध्यान रखें इन्हें धोने के लिए कभी भी खुरदरे स्क्रबर या लोहे के जूने का इस्तेमाल न करें। लोहे के बर्तनों को संग्रह करके रखने से पहले इन पर सरसों का तेल की एक पतली परत लगा दें, ताकि उन पर जंग न लग सके। हमेशा बर्तन को साफ और सूखी जगह पर रखें, जहां पानी और नमी की वजह से उन पर जंग न लगे।

इसकी बजाए गाजर या खीरा को लंबा-लंबा काटकर फ्रिज रख दें। जब यह ठंडी हो जाए तो बच्चों को चबाने के लिए दें। बच्चों को चबाकर फेंक देना और निगलना नहीं। साथ ही इससे ऊ आराम भी मिल जाएगा वो भी बिना किसी साइड-इफेक्ट के।

मार्केट में कई तरह के टीथर बिस्कुट आते हैं, जिन्हें आप उन दांत निकालते समय खाने के लिए दे सकती हैं।  
बच्चों के दांत आने पर मां किन बातों का खयाल रखें—  
जब बच्चे का पहला दांत आता है उस दिन से ही पेरेंट्स को उन दांतों की केयर शुरू कर देनी चाहिए। दरअसल, दांत आने के बाद भी कई पेरेंट्स उनके बड़े होने का इंतजार करते हैं, जोकि गलत है। दांत आने के पहले दिन से बच्चों की केयर शुरू कर दें चाहिए, ताकि आगे चलकर उन्हें किसी भी तरह की कोई समस्या ना हो।

दांत आने के बाद कैसे हो शिशु की डाइट?  
जब बच्चे के दांत आ जाए तो उन्हें लिक्विड डाइट अधिक दें, ताकि उनकी टीथिंग प्रोसेस आसान हो जाए। इसके अलावा उन्हें दही, दूध, दाल का पानी, सब्जियों व फलों की प्यूरी, दलिया, खिचड़ी, फ्रेश जूस आदि दें। जब बच्चे दांत निकालते हैं तो वह मां व दूध नहीं पी पाते ऐसे में उन्हें अधिक से अधिक लिक्विड डाइट दें।



**ऊतकों को मरम्मत का समय मिलेगा**  
मुख्य शोधकर्ता टेलर नॉरिस के मुताबिक कसरत के दौरान हड्डियों और मांसपेशियों पर काफी दबाव पड़ता है। इससे ऊतकों के टूटने और फटने का खतरा रहता है। हालांकि, व्यक्ति अगर हफ्ते में एक दिन का ब्रेक ले तो ऊतकों को आराम तो मिलता ही है, साथ ही शरीर भी उनकी मरम्मत के लिए समय निकाल पाता है। नॉरिस ने यह भी बताया कि रोज-रोज तीव्र गति की एक्सरसाइज करने और शरीर को ऊतकों की मरम्मत करने का मौका न देने पर हड्डियों व मांसपेशियों में क्षरण की शिकायत पनप सकती है। इससे व्यक्ति फ्रैक्चर के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है।

**मांसपेशियों में चोट की आशंका घटेगी**  
अध्ययन के दौरान देखा गया कि एक्सरसाइज रूटीन में ब्रेक नहीं शामिल करने पर शरीर के बुरी तरह से थक जाने की आशंका भी बनी रहती है। इससे व्यक्ति न सिर्फ मांसपेशियों में खिंचाव और जोड़ों में दर्द की समस्या से जूझने लगता है, बल्कि भावनात्मक स्तर पर सुस्ती भी महसूस करता है। उस स्तर पर पहुंचने पर एक्सरसाइज से लंबे समय तक दूरी बनाने की भी नौबत आ सकती है। नॉरिस ने दावा किया कि बड़े-बड़े खिलाड़ी भी ब्रेक को अपने एक्सरसाइज और अभ्यास रूटीन का हिस्सा बनाना जरूरी समझते हैं। इससे वे तन-मन से खेल पर ज्यादा ध्यान देने के

लिए प्रेरित हो पाते हैं।  
**दिमाग को भी चाहिए आराम**  
एक्सरसाइज करते समय शरीर में स्ट्रेस हार्मोन 'कोर्टिसोल' का स्त्राव बढ़ जाता है। इससे मस्तिष्क को यह संदेश जाता है कि शरीर कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है। वह ग्लूकोज को भावी इस्तेमाल के लिए सहेजने लगता है। नतीजतन फैट और कॉर्बोहाइड्रेट के ऊर्जा में तब्दील होने की गति धीमी पड़ जाती है।  
**नई ऊर्जा जुटाने में मदद मिलेगी**  
शोधकर्ताओं की मानें तो एक्सरसाइज से ब्रेक मांसपेशियों का घनत्व बढ़ाने में भी असरदार है। इससे शरीर नई ऊर्जा के साथ कसरत

करने के लिए प्रेरित होता है। उन्होंने ब्रेक के दिन अच्छी नींद लेने और पसंदीदा फिल्में देखने की सलाह दी, ताकि 'फील गुड' हार्मोन का स्त्राव हो और मरम्मत की गति में तेजी आए।  
**कसरत से मन नहीं उवटता**  
अध्ययन में यह भी देखा गया कि ब्रेक एक्सरसाइज को लेकर बोरियत का भाव नहीं पनपने देता है। अलबत्ता इससे व्यक्ति में कसरत के प्रति ज्यादा दिलचस्पी पैदा होती है। वह महसूस कर पाता है कि एक्सरसाइज से उसके तन-मन में कितने सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं। इसे बरकरार रखना कितना फायदेमंद है।

## बच्चों में कान के संक्रमण को न करें नज़रअंदाज़, जानें इसके उपचार

छोटे बच्चे अक्सर कान में दर्द से परेशान रहते हैं, जिसके कारण वह रात को ठीक से सो नहीं पाते हैं और कान खींचकर रोते रहते हैं। कई बार माएं समझ नहीं पाती कि बच्चा ऐसा क्यों कर रहा है। ऐसे में शिशु के कान की जांच करनी चाहिए, क्योंकि अक्सर छोटे बच्चों में कान का संक्रमण अधिक होता है। यदि समय रहते इसका उपचार न किया जाए तो आगे चलकर परेशानी बढ़ सकती है।  
क्यों होता है कान में संक्रमण?  
विशेषज्ञों के मुताबिक, मौसम बदलने के कारण जिन बच्चों को ज्यादा दिनों तक सर्दी-जुकाम रहता है, उनकी नाक के पिछले हिस्से से कान तक आने वाली यूस्टेकियन ट्यूब ठीक से कान नहीं कर पाती जिसकी वजह से कान में संक्रमण या सूजन की समस्या हो सकती है। बच्चों में यह ट्यूब बहुत छोटी होती है जिसकी वजह से उन्हें कान में अधिक दर्द होता है। यदि संक्रमण का समय रहते इलाज न किया जाए तो कान में दबाव बढ़कर पर्दे में छेद हो सकता है।

कान से तरल पदार्थ निकल रहा हो।  
बच्चे को ठीक से सुनाई न दें।  
सर्दी के बाद कान में दर्द होना।  
**कान में संक्रमण के प्रकार**  
-चाइल्ड स्पेशलिस्ट के अनुसार, कान में संक्रमण कई तरह के हो सकते हैं:-  
-कान एक्यूट ओटाइटिस मीडिया  
-यह संक्रमण ज्यादा गंभीर नहीं होता है और तीन हफ्ते से कम समय में ठीक हो जाता है।  
**क्रॉनिक ओटाइटिस मीडिया**  
इसमें कान से तरल पदार्थ निकलता है और इस संक्रमण को ठीक होने में 6 हफ्ते से ज्यादा का समय लग सकता है।  
**कान की हड्डी में संक्रमण**  
यह संक्रमण गंभीर होता है और ज्यादा दिनों तक रह सकता है। इसमें कान की हड्डी में संक्रमण फैल जाता है। इसे ठीक करने के लिए ऑपरेशन करना पड़ता है।

**कान के संक्रमण का उपचार**  
बाल रोग विशेषज्ञों के अनुसार, कान के संक्रमण का उपचार कई बातों पर निर्भर करता है जैसे संक्रमण कितना गंभीर है, बच्चे को कितनी जल्दी कान का संक्रमण होता है, संक्रमण कितने समय से है, बच्चे की उम्र, संक्रमण की वजह और क्या इससे बच्चे को सुनने में दिक्कत हो रही है आदि। सभी बच्चों में कान का संक्रमण अलग तरह का होता है इसलिए उनका उपचार भी अलग तरीके से किया जाता है। कुछ मामलों में डॉक्टर सिर्फ दर्द के लिए दवा देते हैं और संक्रमण अपने आप ठीक हो जाता है। जबकि कुछ मामलों में एंटीबायोटिक से भी इलाज किया जाता है, लेकिन यदि संक्रमण वायरस के कारण होता है तो एंटीबायोटिक्स नहीं दिया जाता है।



**संक्रमण के लक्षण**  
हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, जब बच्चे को कान का संक्रमण होता है तो वह हमेशा चिड़चिड़ा हो जाता है और रोता रहता है। संक्रमण आमतौर पर 6 से 18 महीने के बच्चों में ज्यादा देखा गया है, वैसे यह किसी भी उम्र के बच्चे में हो सकता है, लेकिन चूँकि शिशु बोल नहीं पाते, इसलिए उनमें कान के संक्रमण के लक्षणों की पहचान के लिए बहुत सतर्क रहने की जरूरत है। निम्न लक्षण दिखने पर बच्चे के कान की जांच करें यदि वह-  
- बार-बार कान खींचता है। आमतौर पर दर्द की वजह से वह ऐसा करते हैं।  
- बहुत अधिक रोता रहे।  
- ठीक से सो नहीं पाता है।

करने के लिए ऑपरेशन करना पड़ता है।  
बाल रोग विशेषज्ञों के अनुसार, कान के संक्रमण का उपचार कई बातों पर निर्भर करता है जैसे संक्रमण कितना गंभीर है, बच्चे को कितनी जल्दी कान का संक्रमण होता है, संक्रमण कितने समय से है, बच्चे की उम्र, संक्रमण की वजह और क्या इससे बच्चे को सुनने में दिक्कत हो रही है आदि। सभी बच्चों में कान का संक्रमण अलग तरह का होता है इसलिए उनका उपचार भी अलग तरीके से किया जाता है। कुछ मामलों में डॉक्टर सिर्फ दर्द के लिए दवा देते हैं और संक्रमण अपने आप ठीक हो जाता है। जबकि कुछ मामलों में एंटीबायोटिक से भी इलाज किया जाता है, लेकिन यदि संक्रमण वायरस के कारण होता है तो एंटीबायोटिक्स नहीं दिया जाता है।

दरअसल, जब बच्चा दांत निकालता है तो दर्द से राहत पाने के लिए वह तरह-तरह की चीजें मुंह में डालता है। मगर, उनपर कई तरह के जर्म्स, बैक्टीरिया होते हैं जो मुंह से पेट में जाकर दर्द का कारण बनते हैं। इसके लिए आप पहले तो बच्चों के खिलौनों को डेटॉल से अच्छी तरह साफ करें। दूसरा डॉक्टर से सलाह से शिशु को कोलिक ड्रॉप्स दें, ताकि उनके पेट में दर्द ना हो।  
**बच्चों को चबाने के लिए क्या दें?**  
बच्चों को चबाने के लिए प्लास्टिक की चाबियां या टीथर बिल्कुल ना दें क्योंकि इससे कई तरह के साइड-इफेक्ट्स हो सकते हैं।

## दांत निकालते समय बच्चों को क्यों लगते हैं दर्द?

6 महीने से डेढ़ साल के बीच में दांत आ जाते हैं। जैसे जन्म लेना एक नेचुरल प्रोसेस है उसी तरह बच्चों के दांत आना भी एक नेचुरल प्रक्रिया है। मगर, इस दौरान बच्चों को कई तरह की परेशानियां झेलनी पड़ती हैं जैसे चिड़चिड़ापन, दूध ना पीना, रात में बार-बार उठना, उठती या दर्द लगना आदि।  
**बच्चों के दांत आने पर होने वाले दर्द से कैसे राहत दिलाएं?**  
सबसे पहले अपने नाखूनों को काट लें। अब हाथों को अच्छी तरह साफ करके बच्चों के मसूड़ों पर मसाज करें। इससे उन्हें राहत मिलेगी।  
मलमल के साफ कपड़े को फ्रिज में रखकर ठंडा कर लें। फिर उससे दांतों के मसूड़ों की मसाज करें। यह दर्द के लिए कोल्ड टीथर की तरह काम करेगा।  
आप डॉक्टर की सलाह से बच्चों को पेरिसिटामोल ड्रॉप्स दवा भी दे सकती हैं लेकिन बिना प्रीकंपशन बच्चों को कोई भी मेडिसिन ना दें।  
**खाने पीने के लिए कैसे चीजें दें?**  
जब भी बच्चा दांत निकाल रहा हो तो उसकी डाइट में कैल्शियम फूड्स की मात्रा बढ़ा दें। इसके अलावा डॉक्टर की सलाह से आप उन्हें सिरप या विटामिन सी ड्रॉप दे सकते हैं।  
**दांत निकालते समय बच्चों को क्यों लगती है दर्द?**  
दरअसल, जब बच्चा दांत निकालता है तो दर्द से राहत पाने के लिए वह तरह-तरह की चीजें मुंह में डालता है। मगर, उनपर कई तरह के जर्म्स, बैक्टीरिया होते हैं जो मुंह से पेट में जाकर दर्द का कारण बनते हैं। इसके लिए आप पहले तो बच्चों के खिलौनों को डेटॉल से अच्छी तरह साफ करें। दूसरा डॉक्टर से सलाह से शिशु को कोलिक ड्रॉप्स दें, ताकि उनके पेट में दर्द ना हो।  
**बच्चों को चबाने के लिए क्या दें?**  
बच्चों को चबाने के लिए प्लास्टिक की चाबियां या टीथर बिल्कुल ना दें क्योंकि इससे कई तरह के साइड-इफेक्ट्स हो सकते हैं।



## ड्रेगन की घेराबंदी में पूरी तरह जुटा अमेरिका जापान और ताइवान का मिला साथ

वाशिंगटन। कई सालों से ताइवान पर कब्जे का प्लान बना रहे चीन ने युद्ध की तैयारी तेज कर दी है। ताइवान के आसपास वाले क्षेत्र में चीन दो बार युद्धभ्यास कर चुका है। अब चीन के बढ़ते खतरे को देखकर अमेरिका ने ड्रेगन की घेराबंदी शुरू कर दी है। बाइडेन ने ताइवान से लेकर जापान तक चीन को घेरने का प्लान तैयार किया है। 2023 में एशिया में चीन के खिलाफ बड़ी तैयारी पूरी होने वाली है। ड्रेगन पर नकेल लगाने अमेरिका ताइवान और जापान एक साथ आ गए हैं। जापान और अमेरिका ने खुलकर ऐलान भी कर दिया है कि दोनों देश अपने सैन्य रिश्तों को और मजबूत करने वाले हैं। वन चाइना पॉलिसी को अंजाम देने के इरादे से चीन ताइवान के पास अपना युद्धभ्यास खत्म कर चुका है। लेकिन चीन को जबब देने के लिए तीन देशों ने बड़ी गतिविधि शुरू कर दी है। ये तीनों देश जापान अमेरिका और ताइवान हैं। जापान के अंदर मौजूद अमेरिकी सेना अपने रुख को और ज्यादा आक्रामक करने जा रही है। हाल ही में बनाई गई मरीन यूनिट को अत्याधुनिक जासूसी क्षमता के साथ जापान में तैनात किया जाएगा। ये मरीन सैनिक एंटी शिप मिसाइल भी दाग सकते हैं। अमेरिका की अगुवाई वाले इस गुप में चीन को घेरने का पूरा प्लान सक्रिय कर दिया है। ताइवान के विमान और सेना युद्धभ्यास में जुट गए हैं। ताइवान चीन की सेना के मुकाबले ये तैयारी कर रहा है तब जापान ने चीन की बड़ी घेराबंदी शुरू कर दी है। योनागुनी आइलैंड की ताइवान से दूरी महज 110 किलोमीटर है। चीन के ओजियान से 400 किलोमीटर दूर है। जापान ताइवान के पास योनागुनी आइलैंड पर सैन्य तैयारियां तेज कर रहा है। तेनाती के साथ ही चीन को चेतावनी दी जा रही है। इसके साथ ही अमेरिका ओकिनावा आइलैंड पर मरीन को तैनाती करने वाला है।

## दाने-दाने को मोहताज हुआ पाकिस्तान आटा 200 रुपये और टमाटर 150 रुपये किलो

कराची। अपनी गलतियों की सजा भुगत रहा पाकिस्तान अब बद से बदतर स्थिति में पहुंच गया है। वहां लोग दाने-दाने को मोहताज हो चुके हैं। खाने-पीने की चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं। हालात ये हैं कि लोग खाने के लिए लड़ रहे हैं। भगदड़ में लोगों की मौतें हो रही हैं। पाकिस्तान में आटे की कीमत 200 रुपये तक पहुंच गई है। वहीं प्याज 200 टमाटर 150 रुपये पर पहुंच गया है। डॉकनोमी की बचाने के लिए पाकिस्तान में बाजार को 8 बजे बंद करने का आदेश दिया गया है। रात 8 बजे के बाद बिजली काट कर दी जाती है। लोगों को कम चाय पीने की सलाह दी जा रही है। पुराने पंखे और बत्ती के निर्माण पर रोक लगा दी गई है। अपने जुगाड़ से पाकिस्तान जैसे बचाना चाह रहा है। वहीं वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) पाकिस्तान को जीने की बढती लागत के बीच भूखमरी के एक बड़े खतरे का सामना करते हुए देख रहा है। इसने चेतावनी दी है कि यह प्राकृतिक आपदाओं और बाधित आपूर्ति से ओर बढ़ सकता है। रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के बारे में रिपोर्ट बताती है कि मौसम संबंधी प्राकृतिक आपदा और बाधित आपूर्ति का संयोजन लाखों लोगों के लिए भूखमरी के मौजूदा संकट को एक विनाशकारी परिदृश्य में ले जा सकता है। ऊर्जा की कमी (आपूर्तिकर्ता के बंद होने या प्राकृतिक आकस्मिक या पाइपलाइन) और ऊर्जा ग्रिड को जानबूझकर नुकसान के कारण) मौसमी आपदा के साथ संयुक्त रूप पर व्यापक ब्लैकआउट और घातक परिणाम हो सकते हैं। रिपोर्ट 2023 कहती है कि पाकिस्तान के लिए बुनियादी जरूरतों की सामर्थ और उपलब्धता दोनों ही सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा अकसूरुक्षा का प्रभाव पाकिस्तान में महसूस किया जाना जारी रहेगा और एक साथ खाद्य और ऋण संकट के कारण अस्थिरता को भी बढ़ा सकता है जिसके चलते संभावित तकनीकी-आधारित निर्णय लेने वाले नेतृत्व ढांचे का उदय होगा। रिपोर्ट बताती है कि जीवन-यापन का संकट सबसे बड़ा अल्पकालिक विफलता है जबकि जलवायु शमन और जलवायु अनुकूलन की विफलता सबसे बड़ी दीर्घकालिक चिंता है। भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और अंतर्मुखी रुख आर्थिक बाधाओं को बढ़ाएंगे और शॉर्ट और लॉन्ग-टर्म दोनों जोखिमों को और बढ़ाएंगे।

## समोसा कॉकस में श्री थानेदार के शामिल होने का स्वागत

वाशिंगटन। समोसा कॉकस के भारतीय अमेरिकी सांसदों ने अमेरिकी प्रतिनिधिसभा में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं के एक विशेष समूह में श्री थानेदार के शामिल होने का स्वागत किया है। थानेदार पिछले साल नवंबर में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गए पांचवें भारतीय-अमेरिकी हैं। वह उद्यमी से नेता बने हैं। थानेदार की जीत चार भारतीय अमेरिकी डेमोक्रेटिक सांसदों - डॉ एमी बेरा प्रिमिला जगपाल रो खन्ना तथा राजा कृष्णमूर्ति के अमेरिकी प्रतिनिधिसभा के लिए पुनर्निर्वाचन के बाद हुई है। 'समोसा कॉकस' भारतीय-अमेरिकी सांसदों का एक अनौपचारिक समूह है जो या तो प्रतिनिधि सभा का हिस्सा है अथवा सीनेट का। इस शब्द (टर्म) सांसद कृष्णमूर्ति ने दिया था जिसका मकसद अमेरिकी कांग्रेस में 'देशी' सांसदों की बढ़ती संख्या को रेखांकित करना था। सांसद बेरा ने कहा 'जब मैंने 2013 में कांग्रेस पर संभाला था तब मैं कांग्रेस में इकलौता भारतीय अमेरिकी सदस्य था और इतिहास में तीसरा। उस दिन के बाद से मैं इस बात के लिए प्रतिबद्ध था कि हम कांग्रेस में अपने प्रतिनिधित्व को बढ़ाएं। उन्होंने कहा 'पिछले दशक में मेरे साथ भारतीय अमेरिकी-जयपाल खन्ना और कृष्णमूर्ति शानदार सहयोगी बने और इसके लिए मुझे गर्व है। 118वें कांग्रेस के गठन के साथ हमारा संगठन विस्तृत हुआ है क्योंकि इसमें थानेदार शामिल हुए हैं। सांसद जयपाल ने कहा 'जब हमारे पास सबसे विविध कांग्रेस है मुझे फेसलाह है कि देश भर में प्रत्येक समुदाय तथा संस्कृति के लिए प्रतिनिधित्व कितना मायने रखता है।

## प्रिंस हेरी की किताब 'स्पेयर' बना रही है बिक्री के नए रिकॉर्ड

न्यूयॉर्क। राजकुमार हेरी के बारे में जानने के लिए लोगों की उत्सुकता कम होने का नाम नहीं ले रही, क्योंकि उनकी किताब 'स्पेयर' बिक्री के नए रिकॉर्ड बनाती जा रही है। 'प्रिंस हेरी रैम हाउस' ने बुधवार को घोषणा की कि पहले दिन हेरी की किताब की 14 लाख से अधिक प्रतियां बिकीं। कंपनी द्वारा प्रकाशित अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा और उनकी पत्नी मिशेल ओबामा की किताब 'बिकमिंग' की 14 लाख प्रतियां एक सप्ताह में बिकी थीं। 'बिकमिंग' 2018 में प्रकाशित हुई थी, तब से दुनियाभर में उसकी 1.5 करोड़ प्रतियां बिक चुकी हैं। 'स्पेयर' के बिक्री आंकड़ों में अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन में बिकने वाले हार्डकवर, ऑडियोबुक और ई-बुक संस्करण शामिल हैं। 'रैम हाउस गुप' की अध्यक्ष एवं प्रकाशक गीना सेट्टेला ने एक बयान में कहा, 'स्पेयर' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसके बारे में हमें लगता था कि हम सब कुछ पहले से ही जानते थे, लेकिन अब हम वास्तव में राजकुमार हेरी को उनके ही शब्दों से समझ पा रहे हैं। उन्होंने कहा, 'पहले दिन की बिक्री को देखते हुए स्पष्ट है कि पाठकों भी इस बात से सहमत हैं कि 'स्पेयर' एक ऐसी पुस्तक है जिसे पढ़ने की जरूरत है और यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे प्रकाशित करने पर हमें गर्व है।' राजकुमार हेरी ने एक संस्मरण प्रकाशित करने के मुझे फेसलाह है कि देश भर में प्रत्येक समुदाय तथा संस्कृति के लिए प्रतिनिधित्व कितना मायने रखता है।



मैनहटन के माउंट सिनाई अस्पताल के बाहर अपनी मांगों को लेकर विरोध प्रदर्शन करती हुई नर्स।

## भारत की सीमा के पास हुई सर्जिकल स्ट्राइक, एफएए पर साइबर हमले के लड़ाकू विमानों ने बरसाए बम, लोगों में दहशत, कोई सबूत नहीं : व्हाइट हाउस

आईजोल (एजेंसी)। भारत की सामा के पास सर्जिकल स्ट्राइक देखने को मिली है और लड़ाकू विमान बम बरसाते भी नजर आए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक म्यांमार के लड़ाकू विमानों ने मिजोरम से सटी भारतीय सीमा के पास बम बरसाए हैं। बता दें कि म्यांमार में इस वक्त सेना का शासन है। 2021 में म्यांमार में तख्तापलट हुआ था। म्यांमार की सेना लोकतंत्र समर्थक विद्रोहियों के साथ लड़ाई लड़ रही है। लोकतंत्र समर्थक शक्तियों को खुनी संघर्ष के जरिए सेना कुचलने में लगी है। भारत की पूर्वोत्तर की सीमा से सटा एक मुक्त है म्यांमार जिसे एक समय बर्मा के नाम से भी जाना जाता था। जहां 1 फरवरी 2021 को हुए



सैन्य तख्तापलट ने दुनियाभर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। भारत समेत कई देशों ने इस सैन्य तख्तापलट का विरोध भी जताया था। सेना ने आंग सांग सू की सरकार को हटाकर सत्ता पर कब्जा कर लिया था।

कुकी-चिन नेशनल आर्मी (केएनए) के हेडक्वार्टर पर म्यांमार के लड़ाकू विमानों ने हमला किया है। बताया जा रहा है कि जिस जगह पर एयर स्ट्राइक हुई है वहां ट्रेनिंग कैंप चल रहा था। ये कैंप मिजोरम की सीमा से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। द गार्जियन की रिपोर्ट के अनुसार एक दूसरे विद्रोही का कहना है कि इस हमले के बाद दहशत फैल गई है। बता दें ये कोई पहला मौका नहीं है जब विद्रोही गुटों को म्यांमार की सेना की तरफ से निशाना बनाया गया हो। इससे पहले अक्टूबर में उत्तरी म्यांमार के काचिन राज्य में सेना ने एक संगीत कार्यक्रम पर एयर स्ट्राइक को अंजाम दिया था। इसमें कम से कम 80 लोगों की जाने चली गई थीं।

वाशिंगटन (एजेंसी)। व्हाइट हाउस ने कहा कि पायलटों और अन्य कर्मियों को हवाई मुहों के बारे में अलर्ट करने वाली एक प्रणाली में तकनीकी खराबी आने के मामले में किसी साइबर हमले के कोई सबूत नहीं है। तकनीकी खराबी आने के चलते अमेरिका में सैकड़ों विमानों का परिचालन रोक दिया गया था। उड़ानों पर नजर रखने वाली कंपनी 'फ्लाइट अवेयर' के अनुसार इस खराबी के कारण घरेलू, अमेरिका आने तथा यहां से जाने वाली 9,500 से अधिक उड़ानों के परिचालन में देरी हुई, जबकि 1,300 उड़ानें रद्द की गईं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन ज्यॉ-पियरे ने अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'फ्लिहाल

साइबर हमले का कोई सबूत नहीं है। राष्ट्रपति ने परिवहन मंत्रालय को कार्रगों को पूरी जांच करने और इसके बारे में जानकारी देने का निर्देश दिया है। प्रतिदिन हवाई सफर करने वाले अमेरिकियों की सुरक्षा शीर्ष प्राथमिकता है। 'उन्होंने कहा, 'हम सुनिश्चित करना चाहते हैं कि वे सुरक्षित हों। यह राष्ट्रपति, परिवहन मंत्रालय खास तौर पर एफएए की शीर्ष प्राथमिकता है। हम कार्रगों के बारे में जानना चाहते हैं ताकि ऐसा दोबारा न हो।' परिवहन मंत्री पेडे बटिंगिएन ने कहा कि उन्होंने मूल कार्रगों का नामने के लिए एक प्रक्रिया का निर्देश दिया है और आगे की कार्रगों के संबंध में कुछ सिफारिशें भी की हैं।

## तूफान बाढ़ व भूस्खलन से भारी तबाही : अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया में तूफान से 17 की मौत पानी में डूबे लाखों घर

कैलिफोर्निया (एजेंसी)। अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया में तूफान बाढ़ व भूस्खलन से भारी तबाही मची जिसमें 17 लोगों की मौत हो गई और लाखों घर पानी में डूब गए। क्रिसमस के बाद से लगातार 7वीं बार बुधवार को उत्तरी कैलिफोर्निया में अत्यधिक बारिश हुई जिसने पहले से ही बाढ़ आंधी-तूफान बिजली संकट और जलभराव से प्रभावित इस राज्य की मुश्किलें और बढ़ा दीं। मीडिया अनुसार मौसम विज्ञानी जेक टेलर का कहना है कि बुधवार की बारिश अपेक्षाकृत कमजोर थी और ज्यादातर उत्तर-पश्चिमी कैलिफोर्निया में हुई। उन्होंने इस सप्ताह के अंत में राज्य के अधिकांश हिस्सों में तेज बारिश का पूर्वानुमान जताया। वेदर सर्विस ने कहा कि तूफानों की परेड जारी रहने का अनुमान है जिससे अगले सप्ताह और भी भारी बारिश होगी। सैन फ्रांसिस्को के निचले हिस्से में एक दिसंबर से अब तक 13.6 इंच (34.5 सेंटीमीटर) बारिश दर्ज की गई है। नेशनल वेदर सर्विस ने कहा कि 26 दिसंबर से 11 जनवरी सुबह तक सैन फ्रांसिस्को इंटरनेशनल एयरपोर्ट ओकलैंड शहर और स्टॉकटन शहर सभी ने इन 16 दिनों में रिकॉर्ड बारिश दर्ज किया है। 26 दिसंबर के बाद से मध्य कैलिफोर्निया के बड़े हिस्सों में सामान्य वार्षिक वर्षा की आधी से अधिक बारिश हुई है। हवा के झोंके पेड़ों को हिलाने रहे थे और सैन फ्रांसिस्को से लगभग 160 मील

(260 किमी) उत्तर में मेंडोकिनो काउंटी के तट पर सुबह बारिश होती रही। आंधी में कई बड़े पेड़ उखड़ गए और उग्र समुद्र ने तटों पर मलबे का ढेर बिखेर दिया। हाईवे-एक के किनारे युटिलिटी ट्रकों की कतारें लगी रहीं जिन्हें बिजली काटती की स्थिति में लोगों को राहत पहुंचाने के लिए तैनात किया गया था।

### सड़कें धंसने व हिमपात से यातायात बाधित

राज्य भर में कई सड़कें मिट्टी के धंसने और हिमपात के कारण बाधित हो गईं। कैलिफोर्निया के गर्वनर गेविन न्यूसोम ने मीडिया को बताया कि साल की शुरुआत से अब तक तूफान से कम से कम 17 लोगों की मौत हो चुकी है। अधिकारियों ने बताया कि बुधवार की सुबह एक और पीड़ित पाया गया जब सोनोमा काउंटी में बचावकर्मियों को सड़क से 100 गज (मीटर) दूर बाढ़ के पानी में लगभग 10 फीट (3 मीटर) डूबी एक बार मिली जिसमें एक 43 वर्षीय महिला मृत पड़ी थी। मेंडोकिनो काउंटी में घर पर पेड़ गिरने से एक 68 वर्षीय महिला की मौत हो गई। एक ट्री सर्विस बूम ट्रक के 37 वर्षीय चालक की मौत हो गई जब उसका वाहन फिसलकर सड़क से नीचे उतर गया और कई बार पलटा। सेंट्रल कैलिफोर्निया के एक छोटे से गांव सैन मिगुएल के पास बाढ़ के पानी में बह गए 5 साल के बच्चे की तलाश जारी है।

## पुरुष डॉक्टरों को नहीं होगी महिलाओं का इलाज करने की इजाजत, तालिबान ने जारी किया नया फरमान

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबानी हुकूमत को सत्ता संभालते हुए साल भर से ज्यादा का वक्त गुजर चुका है। वहां के हालात लगातार सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं। आए दिन अफगानिस्तान में तालिबानी फरमान जारी होते रहते हैं। सितंबर 2021 में उन्होंने केवल लड़कों को स्कूल लौटने की अनुमति दी, अधिकांश किशोर लड़कियों को माध्यमिक विद्यालय से बाहर कर दिया और अफगान महिलाओं को स्वास्थ्य और शिक्षा को छोड़कर अधिकांश क्षेत्रों में काम करने से रोक दिया। अब खबर है कि तालिबान में एक नया फरमान जारी हुआ है कि वहां की महिलाएं पुरुष डॉक्टरों के पास अपना इलाज नहीं करा सकेंगी।



काबुल के एक इलाके में डॉ. सोना (सरनेम) काबुल के एक क्लिनिक में नौकरि मिली थी। डॉ

सोना को हाल ही में बताया गया था जब उन्होंने अपने रोजगार की स्थिति की अंतिम पुष्टि के लिए क्लिनिक को बुलाया था। यह तालिबान सरकार के नए फैसले से ठीक पहले था, जिसमें अस्पतालों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया था कि पुरुष डॉक्टरों को अब महिला रोगियों का इलाज करने की अनुमति नहीं है।

तालिबान के इस फैसले के बाद अफगानिस्तान की जर्जर मेडिकल सुविधाओं पर और बुरा असर पड़ेगा। दुनिया के मेडिकल विशेषज्ञों का मानना है कि उसके इस फैसले से अफगानिस्तान में बच्चियों और महिलाओं की मृत्यु दर में बढ़ोतरी होगी। काबुल में काम करने वाली एक डॉक्टर को इस फैसले की वजह से घर बैठना पड़ रहा है।

## पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने सत्तारूढ़ गठबंधन के नेताओं पर निशाना साधा

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान के अपदस्थ प्रधानमंत्री इमरान खान ने बुधवार को सत्तारूढ़ गठबंधन के नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के नेतृत्व में इन धोखेबाजों ने देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है और अब वे दुनिया से भीख मांग रहे हैं। पाकिस्तान और संयुक्त राष्ट्र की मेजबानी में सोमवार को जिनेवा में हुए अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने पिछले साल आई भीषण बाढ़ के बाद आर्थिक

संकट से जूझ रहे देश को जलवायु अनुकूल तरीके से पुनर्निर्माण में मदद करने के लिए 10 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक धनराशि देने का वादा किया है, जिसके बाद खान की यह टिप्पणी आई है। अपनी पार्टी के सांसदों को वीडियो के जरिए संबोधित करते हुए पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष ने पाकिस्तान के मुकाबले भारत और बांग्लादेश की प्रगति के बारे में भी बात की। खान ने कहा, 'केवल आईटी क्षेत्र का उदाहरण लें भारत का आईटी

निर्यात 2000 में एक अरब अमेरिकी डॉलर था और आज यह 140 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है। और देखें कि हम आज कहां खड़े हैं। दो परिवार - शरीफ और जरदारी - जो 35 साल तक सत्ता में रहे हैं, लेकिन उन्होंने कभी निर्यात पर ध्यान नहीं दिया। खान ने कहा कि यह केवल इसलिए हुआ है क्योंकि धोखेबाजों का एक समूह हम पर थोप दिया गया है। खान ने कहा, 'शहबाज के नेतृत्व में इन धोखेबाजों ने देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है



और अब वे संघर्षरत अर्थव्यवस्था के लिए दुनिया से भीख मांग रहे हैं।

## पेरू: अपदस्थ राष्ट्रपति पेद्रो कैस्टिलो के समर्थन में सरकार विरोधी-प्रदर्शन कुस्को तक पहुंचा



लीमा (एजेंसी)। पेरू के राष्ट्रपति डिना बोल्सुआर्टो की सरकार के खिलाफ प्रदर्शन पर्यटक शहर कुस्को तक पहुंच गया है, जहां बुधवार को हिंसक झड़पें हुईं। एक महीने पहले शुरू हुए इन विरोध-प्रदर्शनों में अभी तक 47 लोगों की जान जा चुकी है। कुस्को में स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों द्वारा शहर के हवाई अड्डे पर कब्जा करने की कोशिश के बाद हुई झड़प में 16 नागरिक और छह पुलिस अधिकारी घायल हो गए। मौके पर कई विदेशी पर्यटक भी मौजूद थे। पेरू के 41 प्रांतों में बोल्सुआर्टो के खिलाफ और अपदस्थ राष्ट्रपति पेद्रो कैस्टिलो के समर्थन में लोगों ने प्रदर्शन किया और सड़कें जाम कीं। कैस्टिलो को पद से हटाए जाने और उनकी गिरफ्तारी के बाद दिसंबर की

शुरुआत से प्रदर्शन जारी हैं। विरोध-प्रदर्शन मुख्य रूप से देश के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहा है, जहां अब भी लोग कैस्टिलो के प्रति वफादारी रखते हैं। वे तत्काल चुनाव करने, बोल्सुआर्टो के इस्तीफे, कैस्टिलो की रिहाई और पुलिस के साथ संघर्ष में मारे गए प्रदर्शनकारियों के लिए न्याय की मांग कर रहे हैं। अभी तक सबसे भयावह हिंसा सोमवार को जुलियाका शहर में टिटिकाका झील के पास हुई थी, जिसमें पुलिस के साथ झड़प में 17 लोग मारे गए थे। हिंसा में एक पुलिस अधिकारी को जिंदा जला दिया गया था। पेरू के लोकपाल के कार्यालय के अनुसार, पेरू के साथ झड़प में अब तक 39 नागरिक मारे गए हैं, जबकि सड़क जाम करने के दौरान हुए हादसों में सात अन्य की

मौत हुई है। पेरू सरकार ने पुनो में तीन दिन तक रात आठ बजे से सुबह चार बजे तक कर्फ्यू लगाते की घोषणा की है। पुनो में लोग हिंसा में मारे गए 17 लोगों के शवों के ताबूत के साथ चलते नजर आए थे। इस बीच, मानवाधिकारों पर अंतर-अमेरिकी आयोग का एक प्रतिनिधिमंडल विरोध-प्रदर्शनों और पुलिस के प्रतिक्रिया की जांच के लिए पेरू पहुंच गया है। कैस्टिलो की उत्तराधिकारी डिना बोल्सुआर्टो ने राष्ट्रपति पद और संसद के लिए 2024 में चुनाव करने की घोषणा का समर्थन किया है, जो 2026 के लिए निर्धारित है। उन्होंने सुरक्षा बलों के अत्यधिक बल का इस्तेमाल करने के मामले में भी न्यायिक जांच का समर्थन किया है।



### कांग्रेस अध्यक्ष खरगे का संदेश स्वामी विवेकानंद भारत जोड़ो में विश्वास करते थे

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर गुरुवार को कहा कि वह भारत जोड़ो में विश्वास करते थे जो भारत के आंतरिक मूल्यों में रचा-बसा है। उन्होंने राष्ट्रीय युवा दिवस पर दिए संदेश में कहा कि कांग्रेस की ओर से मैं आपको राष्ट्रीय युवा दिवस की हार्दिक बधाई देता हूँ। यह दिन भारत के महानतम दार्शनिकों में से एक स्वामी विवेकानंद की जयंती के मौके पर मनाया जाता है। खरगे ने कहा कि विवेकानंद जी भारतीय मूल्यों के प्रतीक और हमारे युवाओं के लिए एक प्रेरणापुंज थे। स्वामी जी के विचारों और आदर्शों को श्रद्धांजलि के रूप में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में घोषित किया। कांग्रेस अध्यक्ष के मुताबिक स्वामी विवेकानंद ने 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में कहा था कि सांप्रदायिकता कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने लंबे समय से इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है। उन्होंने इस धरती को हिंसा से भर दिया है और कितनी ही बार यह धरती खून से लाल हो चुकी है। न जाने कितनी सभ्यताएं तबाह हुईं और कितने देश मिटा दिए गए। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा कि आज हमारे करोड़ों लोग भारत को एक करने की आकांक्षा लिए इसके सपने देखने और समाज में फैली नफरत को मिटाने के लिए आतुर हैं। स्वामी जी का संदेश हम सभी के लिए विशेष रूप से हमारे युवाओं के लिए मार्गदर्शक प्रकाश बना हुआ है। उनका कहना है कि भारत दुनिया की युवा आबादी का पांचवां हिस्सा है। भारत का युवा बदलाव के लिए आतुर है। वे बेहतर और सुरक्षित जीवन का सपना देख रहे हैं। हम जानते हैं कि यह सभी सभ्यताओं का सपना है जब हम धर्म जाति भाषा जातीयता रंग पंथ या लिंग की बाधाओं को खत्म करेंगे। खरगे ने कहा सद्भाव के साथ रहने वाला समाज ही इस प्राप्त कर सकता है।

### भाजपा से निलंबित नूपुर शर्मा को मिला हथियार का लाइसेंस

- दिल्ली पुलिस ने कहा - नूपुर को आत्मरक्षा के लिए जारी किया आर्म लाइसेंस

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी की पूर्व प्रवक्ता नूपुर शर्मा को दिल्ली पुलिस ने हथियार का लाइसेंस जारी किया है। मीडिया में पेंगबर मोहम्मद के खिलाफ कथित रूप से आपत्तिजनक टिप्पणी करने को लेकर विवादों में आई नूपुर को पुलिस की तरफ से यह लाइसेंस आत्मरक्षा के लिए जारी किया गया है। दरअसल इस बयान के बाद नूपुर को लगातार जान से मारने की कई धमकियां दी गईं जिसके बाद उन्हें दिल्ली पुलिस ने यह आर्म लाइसेंस दिया। नूपुर को तमाम जगहों से जान से मारने की धमकी दी गई। उनके खिलाफ मुकदमे भी दर्ज किए गए। भारतीय जनता पार्टी ने उनके इस विवादाित बयान के बाद अपनी राष्ट्रीय प्रवक्ता नूपुर शर्मा को पार्टी से निलंबित कर दिया था। उनके अलावा दिल्ली इकाई के मीडिया प्रमुख नवीन कुमार जंदल को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया। पार्टी ने दोनों नेताओं के खिलाफ यह कार्रवाई ऐसे समय में की जब उनके बयानों को लेकर विवाद हो गया था और मुस्लिम समुदाय ने इसका भारी विरोध किया था। दोनों नेताओं के खिलाफ की गई कार्रवाई को विवाद समाप्त करने की भाजपा की एक कोशिश के रूप में देखा गया। इस मुद्दे पर बवाल मचाने के बाद भाजपा ने एक तरह से दोनों नेताओं के बयानों से किनारा करते हुए एक बयान जारी कर कहा कि वह सभी धर्मों का सम्मान करती है और किसी भी धर्म के पूजनीय लोगों का अपमान स्वीकार नहीं करती। भाजपा से निलंबन के बाद नूपुर शर्मा ने अपना बयान बिना शर्त वापस ले लिया था। उन्होंने कहा था कि उनकी मंशा किसी की धार्मिक भावना को ठेके पहुंचाने की नहीं थी।

### जम्मू-कश्मीर में बालटाल-जोजिला के पास भारी हिमस्खलन चारों तरफ दिखा बर्फ का सैलाब

- श्रीनगर -लेह राष्ट्रीय राजमार्ग व मुगत रोड पर यातायात बाधित

श्रीनगर। पूरे जम्मू-कश्मीर में लगातार कड़ाके की ठंड जारी है। इसी बीच जम्मू-कश्मीर के गांदरब जिले के सोमनाथ क्षेत्र में बालटाल जोजिला के पास गुरुवार सुबह एक बड़ा हिमस्खलन हुआ इसमें जान-माल के किसी नुकसान की खबर नहीं है। मीडिया के अनुसार स्थानीय प्रशासन इस हिमस्खलन के प्रभाव के बारे में जानकारी जुटा रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले 24 घंटे में राज्य के कई इलाकों में भारी बर्फबारी और बारिश होने की संभावना है। जम्मू संभाग के मेदानी इलाकों में घने कोहरे और बादलों के कारण सड़क यातायात प्रभावित है। इसके साथ ही हवाई सेवाओं पर भी इसका असर दिख रहा है। कोहरे के कारण रेल सेवा भी लगातार प्रभावित है। प्रतिदिन कई ट्रेनें निर्धारित समय से घंटों की देरी से पहुंच रही हैं। मौसम विज्ञान केंद्र श्रीनगर के अनुसार 12 और 13 जनवरी के लिए पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने के कारण जम्मू और कश्मीर संभाग में बारिश-बर्फबारी के आसार हैं। इसमें कुछ स्थानों पर मौसम ज्यादा खराब हो सकता है। खराब मौसम के कारण जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग और मुगत रोड पर यातायात बाधित हो सकता है। जम्मू में बुधवार को दिन चढ़ने के साथ तेज हवाओं के बाद हल्की बारिश हुई। यहां सुबह के समय दृश्यता 25 मीटर तक रह गई थी। इससे पहले 4 और 5 जनवरी को कश्मीर घाटी को लहरा से जोड़ने वाले श्रीनगर-लेह हाईवे पर 24 घंटे में दस स्थानों पर हिमस्खलन के कारण भारी बर्फ पहाड़ों से खिसककर सड़क पर आ गई थी जिस कारण घंटे यातायात बाधित रहा। सीमा सड़क संगठन ने जल्द ही जवानों और आधुनिक मशीनों को तैनात कर यातायात बहाल कर दिया था। हिमस्खलन में किसी प्रकार के नुकसान की सूचना नहीं है। इस साल रिकॉर्ड समय तक खुले रहे जोजिला मार्ग को 7 जनवरी से यातायात के लिए बंद कर दिया गया। बीआरओ के जोजिला मार्ग के प्रभारी कनिष्ठ अभियंता अमित ने बताया कि 4 और 5 की दरमियानी रात को जोजिला मार्ग पर 6-7 किलोमीटर के दायरे में करीब 10 स्थानों पर हिमस्खलन हुआ। श्रीनगर-लेह राजमार्ग कश्मीर को लद्दाख के साथ जोड़ने वाला एक मात्र मार्ग है। इसलिए यह न केवल आम जनता के लिए बल्कि सैन्य दृष्टिकोण के चलते भी बेहद महत्वपूर्ण है। इस वह 6 जनवरी इस सीजन का आखिरी दिन रहा जब वहां की सोनमार्ग से द्रास और द्रास से संपन्न की और आने जाने की अनुमति मिली। 7 जनवरी से इसे पूरी तरह से बंद किया गया।

### पाकिस्तानी उच्चायोग के कर्मचारी ने महिला से पूछा..अपनी यौन इच्छाओं के लिए क्या करती हो

नई दिल्ली। एक महिला शिक्षाविद ने दिल्ली में पाकिस्तानी उच्चायोग के कुछ वरिष्ठ कर्मचारियों द्वारा पाकिस्तानी वीजा के लिए आवेदन करने के दौरान आभद्र व्यवहार और यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए हैं। एक विश्वविद्यालय में एक वरिष्ठ प्रोफेसर और एक विभाग की प्रमुख ने कहा कि उसने पाकिस्तान उच्चायोग के साथ एक ऑनलाइन वीजा नियुक्ति बुक की थी। 1 जब उसने उनकी लाहौर यात्रा के उद्देश्य के बारे में पूछा गया तब उन्होंने अधिकारी से कहा मैं स्मारकों की तस्वीरें लेने और उन पर लिखने के लिए लाहौर जाना चाहती हूँ और एक विश्वविद्यालय भी जाना चाहती हूँ जहाँ मुझे व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

जब वह जाने वाली थी तभी एक और कर्मचारी आ गया और उससे निजी सवाल पूछने लगा जिससे वह असहज हो गई। दूतावास के कर्मचारी ने मुझसे पूछा कि मैंने शादी क्यों नहीं की मैं बिना शादी के कैसे रहूँ मैं अपनी यौन इच्छाओं के लिए क्या करूँ? उन्होंने कहा कि मेरा वीजा नहीं दिया जा सकता है और मुझे बाद में फिर से कोशिश करनी चाहिए क्योंकि वे मेरे बारे में सत्यापन करने वाले हैं। महिला ने बताया कि उन्होंने मुझसे पूछा कि मेरी शादी क्यों नहीं हुई मैं बिना शादी के कैसे रहूँ? मैं अपनी यौन इच्छाओं के लिए क्या करती हूँ?

विदेश मंत्री एस जयशंकर को दी गई अपनी शिकायत में उन्होंने मामले को उठाने की मांग की है। उसने विदेश मंत्री को पाक उच्चायोग के कर्मचारी के साथ व्हाट्सएप चैट के स्क्रीनशॉट भी भेजे हैं। उसने आरोप लगाया कि उसे भारत सरकार के खिलाफ लिखने के लिए कहा गया और अच्छे पारिश्रमिक की पेशकश की गई जिसे उसने स्पष्ट रूप से मना कर दिया। महिला ने अपनी शिकायत में कहा कि फिर उन्होंने कहा कि मेरा वीजा नहीं दिया जा सकता है और मुझे बाद में फिर से कोशिश करनी चाहिए क्योंकि वे मेरे बारे में सत्यापन करने वाले हैं। महिला ने बताया कि उन्होंने मुझसे पूछा कि मेरी शादी क्यों नहीं हुई मैं बिना शादी के कैसे रहूँ? मैं अपनी यौन इच्छाओं के लिए क्या करती हूँ?

## नेपाल सीमा पर अवैध मदरसों को कौन कर रहा है फंडिंग? योगी सरकार ने जिलाधिकारियों को दिए जांच के आदेश



लखनऊ (एजेंसी)। पिछले तीन वर्षों में उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से सटे भारत-नेपाल सीमा पर मस्जिदों और मदरसों की बढ़ती संख्या गंभीर सुरक्षा चिंताओं का विषय है, खुफिया एजेंसियों ने भी हाल ही में अपनी रिपोर्ट में इसको लेकर चिंता जाहिर की थी। रिपोर्ट में कहा गया है था कि धार्मिक सेटअप नेपाल की सीमा से 10 किमी के भीतर और नेपाल की सीमा के पार भी हैं, जिससे बिहार, उत्तर प्रदेश और

पश्चिम बंगाल में सीमावर्ती क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में जनसांख्यिकीय परिवर्तन हुआ है। अब नेपाल की सीमा से सटे अवैध मदरसों पर उत्तर प्रदेश सरकार सख्त नजर आ रही है। यूपी सरकार ने जिले के जिलाधिकारियों को नेपाल सीमा से सटे अवैध मदरसों के फंडिंग स्रोतों की जांच के आदेश दिए हैं। बताया जाता है कि इन मदरसों ने खुद को चलाने के लिए मिलने वाले जकात यानी दान के पैसे को अपने इनकम का जरिया

पोषित किया हुआ है। उत्तर प्रदेश सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा है कि नेपाल की सीमा पर ऐसे मदरसे हैं, जो अपने डोनेशन ग्रुप का नाम नहीं बता रहे हैं। उनका कहना है कि ऐसे मदरसों को पहचान कर ली गई है। अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि ऐसा लगता है कि इन मदरसों को बाहर से पैसा मिल रहा है। कोई बाहर से उन्हें फंड क्यों देगा? योगी सरकार के मंत्री ने साफ कहा कि हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चों का गलत इस्तेमाल हो, इसकी संभावनाएं हैं।

### मदरसों की अवैध फंडिंग का या है मामला?

अधिकारियों ने खुफिया जानकारी का हवाला देते हुए कहा कि पिछले तीन वर्षों में, नेपाली क्षेत्रों में मस्जिदों की संख्या 2018 में 760 से बढ़कर 2021 में 1,000 हो गई है, जबकि मदरसों की संख्या 2018 में 508 से बढ़कर 2021 में 645 हो गई है। सुरक्षा फ्रंट के सूत्रों ने कहा कि इन धार्मिक प्रतिष्ठानों को पाकिस्तान की इंटर-सर्विसेज इंटीलजेंस (आईएसआई) और विदेशों में काम कर रहे अन्य भारत विरोधी संगठनों द्वारा वित्त पोषित किया जा रहा है। सुरक्षा बलों के अधिकारियों ने स्वीकार किया है कि इन मस्जिदों और मदरसों के आकार और भव्यता से ही विदेशी फंडिंग का संकेत मिलता है और इन धार्मिक घरानों को आईएसआई के अलावा अरब देशों से भी फंडिंग मिलती है।

### आतंकी लखवीर सिंह के इशारे पर जेल में हमला घायल हवालाती की मां ने सीएम मान को लिखा खत

तरनतारन। केंद्रीय जेल गॉइंदवाला साहिब में बंद गैंगस्टरों द्वारा तीन हवालातियों और जेल कर्मी को घायल करने के मामले ने बुधवार को नया मोड़ ले लिया। घायल हवालाती करनप्रती सिंह की मां कुलदीप कौर ने मुख्यमंत्री भगतवंत मान को लिखित शिकायत भेजकर आरोप लगाया है कि कनाडा में बैठे आतंकी लखवीर सिंह के इशारे पर बड़ी साजिश के तहत जेल में हमला हुआ था। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्रीय जेल गॉइंदवाला साहिब में 200 से अधिक खतरनाक अपराधी बंद हैं। पंजाबी गायक सिद्धू मुसेवाला हत्याकांड से संबंधित गैंगस्टर दीपक टोन् व उसके साथी मनदीप सिंह मना ने अपने करीब 25 साथियों के साथ मिलकर जेल पर हमला किया था। हमले में उसका बेटा करनप्रती सिंह फतेह व उसके दो दोस्त मनशा नन्व व अमन कुमार के अलावा एक जेल कर्मी घायल हो गए थे। कुलदीप कौर ने आरोप लगाया कि जितनी देर तक तीनों हवालाती अधमरे नहीं हुए उतनी देर तक उन्हें नहीं छोड़ा गया। कौर ने शिकायत की कापी डीजीपी पंजाब एडीजीपी जेल एडीजीपी सुरक्षा डीआईजी फिरोजपुर एसएसपी तरनतारन व जिला सेशन जज तरनतारन को भी भेजी गई है।

## चीन ने पूर्वी सेक्टर में बढ़ा दी सैनिकों की तैनाती, एलएसी को लेकर आर्मी चीफ का बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कहा कि चीन के साथ लगी वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर स्थिति स्थिर लेकिन अप्रत्याशित है। 15 जनवरी को सेना दिवस से पहले मीडिया को संबोधित करते हुए जनरल पांडे ने कहा कि दोनों देश एलएसी पर सात में से पांच मुद्दों को हल करने में सक्षम हैं और सैन्य और राजनयिक स्तर पर बातचीत जारी रखते हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वी सेक्टर में चीनी सैनिकों की तैनाती में मामूली वृद्धि हुई है, लेकिन किसी भी स्थिति से निपटने के लिए रिजर्व सहित भारतीय सेना के जवानों को वहां पर्याप्त रूप से तैनात किया गया है।



अच्छी तरह से चल रहा है, लेकिन आतंकवाद और आतंकी ढांचे को सीमा पर से समर्थन अभी भी बना हुआ है। उत्तरी सीमाओं पर स्थिति स्थिर है लेकिन अप्रत्याशित है। हम सात मुद्दों में से पांच को हल करने में सफल रहे हैं। हमने सैन्य और राजनयिक दोनों स्तरों पर बात करना जारी रखा हुआ है। किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए हमारे पास पर्याप्त बंडर है।

### आर्मी में होगी जवानों की तैनाती

जोशीमठ भू-धसाव पर सेना प्रमुख ने कहा कि

### किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए तैयार

सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कहा कि पूर्वोत्तर के अधिकांश राज्यों में शांति है। आर्थिक गतिविधियों और विकास की पहल के अच्छे परिणाम मिले हैं। जहां तक जम्मू-कश्मीर की स्थिति का सवाल है, फरवरी 2021 में हुआ संघर्ष विराम

### अगर टिहरी बांध टूटा तो 12 घंटे में डूब जाएंगे यूपी के कई बड़े शहर !

- 42 किमी में फैली झील 22 मिनट में हो जाएगी खाली

### -जोशीमठ में आई आपदा के लिए जलविद्युत परियोजनाएं जिम्मेदार !

पिथौरगढ़ (एजेंसी)।

उत्तराखंड के जोशीमठ में आई आपदा के लिए जलविद्युत परियोजनाओं को भी जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। माना जा रहा है कि टनल निर्माण से यहां की जमीन भीतर पूरी तरह खोखली हो गई थी। नतीजा ये है कि अब ये जगह-जगह दरकने लगी है। ऐसे में जलविद्युत परियोजनाओं पर कई सवाल उठने लगे हैं। जलविद्युत परियोजनाओं पर उठ रहे सवालों के बीच विश्व के सबसे बड़े बांधों में एक टिहरी बांध पर भी चर्चा तेज है जिस टिहरी बांध को 24 सी मेगावॉट बिजली पैदा करने के लिए बनाया गया था।

वहां परियोजना बनने के 17 साल बाद मात्र हजार मेगावॉट ही बिजली का उत्पादन हो रहा है। टिहरी बांध को बनाने में जहां टिहरी शहर को जलमग्न होना पड़ा वहीं 37 गांव पूरी तरह डूब गए। यही नहीं अन्य 88 गांव भी आंशिक रूप प्रभावित हुए हैं। हालात ये हैं कि टिहरी बांध बनने से 40 गांवों में हर समय खतम मंडाया हुआ है। इन गांवों में अक्सर जमीन



दरकने की घटनाएं होती रहती हैं। पहले चरण में हजार मेगावॉट का टिहरी बांध निर्माण होना था जबकि दूसरे चरण में 400 मेगावॉट का कोटर बांध बनना था जबकि अंत में हजार मेगावॉट की टिहरी पम्प स्टोरेज परियोजना बननी थी लेकिन जिस योजना को बनाने में करीब पूरी सभ्यता को डूबा दिया गया। वहां अभी भी लक्ष्य के मुताबिक बिजली उत्पादन नहीं हो रहा है। यही नहीं माना जाता है कि अगर बड़ी तीव्रता का भूकंप आया तो डैम भी टूट सकता है। अगर ऐसा हुआ तो तय है कि ऋषिकेश हरिद्वार बिजनौर मेरठ और बुलंदशहर तक का इलाका पूरी तरह जलमग्न हो जाएगा। अगर टिहरी बांध टूटा तो मात्र एक घंटे में ऋषिकेश और हरिद्वार पूरी तरह डूब जाएंगे जबकि 12 घंटे में डैम का पानी मेरठ तक पहुंच जाएगा। इसके अलावा टिहरी बांध की 42 किलोमीटर लंबी झील को खाली होने में सिर्फ 22 मिनट का समय लगेगा।

## शक्तिशाली भारत कभी भी दुनिया के लिए खतरा नहीं हो सकता : आरिफ मोहम्मद खान

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने बृहस्पतिवार को कहा कि शक्तिशाली भारत कभी भी दुनिया के लिए खतरा नहीं हो सकता, क्योंकि इसके सांस्कृतिक मूल्य इसे दूसरों पर हावी होने के बारे में सोचने की इजाजत नहीं देते हैं। राज्यपाल ने यहां राष्ट्रीय युवा दिवस और भारत की जी-20 की अध्यक्षता के तहत आयोजित अंतरराष्ट्रीय युवा शिखर सम्मेलन भारत-2023 का उद्घाटन किया। खान ने कहा, "... दुनिया में हर कोई (इस बात को लेकर) निश्चित हो सकता है कि शक्तिशाली भारत केवल अन्य देशों और मानवता के लिए मददगार हो सकता है, (लेकिन)



शक्तिशाली भारत कभी भी दुनिया में किसी के लिए खतरा नहीं बन सकता है। कभी नहीं ... क्योंकि हमारे सांस्कृतिक मूल्य हमें दूसरों पर हावी होने के मामले में सोचने की इजाजत नहीं देते हैं।"

उन्होंने कहा कि कोई अपनी मान्यताओं का पालन करने की स्वतंत्रता का लुप्त ले सकता है, लेकिन इसे दूसरों पर थोपने का कोई अधिकार नहीं है। खान ने कहा, "मेरे पास अपनी आस्था पर अमल करने की पूरी आजादी, हर अधिकार है, लेकिन मुझे अपनी आस्था दूसरों पर थोपने का कोई अधिकार नहीं है। यह भारतीय सभ्यता की बुनियादी विशेषताएं हैं।" शिखर सम्मेलन में अन्य देशों के युवाओं के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इस मौके पर राज्यपाल ने उम्मीद जताई कि जो लोग भारत में अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वे अपने-अपने देशों में भारतीय संस्कृति और जीवन शैली के दूत बनेंगे।

## संविधान सर्वोच्च है संसद नहीं : चिदंबरम

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को संसदीय वर्चस्व पर जोर देने के एक दिन बाद कांग्रेस नेता पी चिदंबरम ने गुरुवार को कहा कि संविधान सर्वोच्च है और वीपी के विचार एक चेतवनी संकेत हो सकते हैं। चिदंबरम ने कहा कि राज्यसभा के सभापति गलत हैं जब वह कहते हैं कि संसद सर्वोच्च है। संविधान सर्वोच्च है। उन्होंने कहा कि यह चेतवनी हो सकती है वास्तव में सभापति के विचारों को प्रत्येक संविधान-प्रेमी नागरिक को आने वाले खतरों के प्रति चेतवनी के रूप में लेना चाहिए।

उन्होंने कहा कि संविधान के मूलभूत सिद्धांतों पर बहुसंख्यकों द्वारा संचालित हमले को रोकने के लिए मूल संरचना सिद्धांत विकसित किया गया था। उन्होंने प्रश्न किया कि मान लें कि संसद बहुमत से संसदीय पणाली को राष्ट्रपति प्रणाली में बदलने के लिए मतदान करती है या राज्य सूची को निरस्त करती है और राज्यों की विशेष विधायी शक्तियों को छीन लेती है। क्या ऐसे संशोधन मान्य होंगे? उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बुधवार को दोहराया कि संविधान में संशोधन करने और कानून से निपटने के लिए संसद की शक्ति किसी अन्य प्राधिकरण के अधीन नहीं है। यह लोकतंत्र की जीवन रेखा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि जब विधायिका न्यायपालिका और

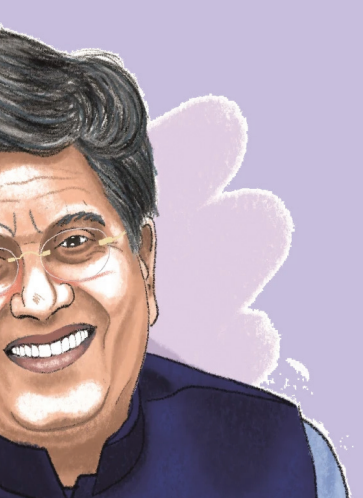
प्राधिकरण के अधीन नहीं है और सभी संवैधानिक संस्थानों न्यायपालिका कार्यपालिका और विधायिका को अपने-अपने तक सीमित रखने की आवश्यकता है। वे बुधवार को राजस्थान विधानसभा में 83वें अखिल भारतीय पीठसीन अधिकारियों के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संविधान में संशोधन करने और कानून से निपटने की संसद की शक्ति किसी अन्य प्राधिकरण के अधीन नहीं है। यह लोकतंत्र की जीवन रेखा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि जब विधायिका न्यायपालिका और

## जी20 सम्मेलन भारत के लिए अपनी क्षमताओं के प्रदर्शन का 'शानदार अवसर': पीयूष गोयल

वाशिंगटन (एजेंसी)। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि अगला जी20 शिखर सम्मेलन भारत के लिए अपनी कई क्षमताओं को दिखाने और कई चुनौतियों को नेतृत्व करने का एक 'बहुत बड़ा अवसर' प्रस्तुत करता है। गोयल आधिकारिक यात्रा पर अमेरिका में हैं। उन्होंने बुधवार को अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कैथरीन टाई के साथ भारत-अमेरिका व्यापार नीति मंच की बैठक की सह-अध्यक्षता की। उन्होंने बुधवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन में बताया, 'जी20 भारत के लिए दुनिया के सामने कई चुनौतियों को नेतृत्व करने का एक बहुत ही रोमांचक अवसर होने जा रहा है। यह हमारे लिए भारत की कई क्षमताओं को प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर बनने जा रहा है। भारत ने एक दिसंबर को औपचारिक रूप

से जी20 की अध्यक्षता ग्रहण की। राष्ट्र/सरकार के प्रमुखों के स्तर पर जी20 नेताओं का अगला शिखर सम्मेलन नौ और 10 सितंबर को नई दिल्ली में आयोजित होने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि भारत 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के विषय से प्रेरित होकर और आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और महामारी को सबसे बड़ी चुनौतियों के रूप में सूचीबद्ध करके एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करेगा, जिससे सबसे अच्छे तरह से एकजुट होकर लड़ा जा सकता है। गोयल ने कहा कि मोदी को दुनिया के -सबसे बड़े नेताओं- में से एक माना जाता है और वह कार्यवाही व समाधान में विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा, 'यदि आप याद करते हैं, जब (पूर्व अमेरिकी) उपराष्ट्रपति अल गोर असुविधाजनक सच्चाई के साथ

सामने आए थे, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सुविधाजनक कार्यवाही पर अपना स्वयं का पक्ष लेकर आए थे, क्योंकि वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जो कार्यवाही में विश्वास करते हैं। सारा जीवन, वह एक ऐसे व्यक्ति रहे हैं जो समाधान में विश्वास करते हैं।' जी20 समूह दुनिया की प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर-सरकारी मंच है। इसमें अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं। और राज्यों की विशेष शक्ति को छीन लेती है। क्या ऐसे संशोधन मान्य होंगे? उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बुधवार को दोहराया कि संविधान में संशोधन करने और कानून से निपटने के लिए संसद की शक्ति किसी अन्य प्राधिकरण के अधीन नहीं है। यह लोकतंत्र की जीवन रेखा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि जब विधायिका न्यायपालिका और





## 14 साल की नाबालिग लड़की से दो युवकों ने किया दुष्कर्म गर्भवती होने पर मामला आया सामने

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

सचिन जीआईडीसी-कनसाड रोड क्षेत्र में 14 साल की नाबालिग लड़की के साथ दो युवकों अलग अलग समय पर दुष्कर्म किया। पीड़िता के गर्भवती होने पर पूरा मामला सामने आने पर परिवार ने आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करवा दी। पुलिस ने एक आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है। जानकारी के मुताबिक सूरत के सचिन जीआईडीसी-कनसाड रोड क्षेत्र में उत्तर प्रदेश का मूल निवासी परिवार रहता है। परिवार की 14 वर्षीय किशोरी कक्षा 9 की छात्रा थी लेकिन पढ़ाई में मन नहीं लगने से उसने स्कूल छोड़ दी थी। चार



दिन पहले किशोरी के पेट में दर्ज होने और पेट बड़ा देख परिवार उसे तुरंत उपचार के लिए डॉक्टर के पास ले गए। जहां पता चला कि किशोरी चार महीने की गर्भवती है।

डॉक्टर की बात सुनकर माता-पिता चौंक उठे और किशोरी इस बारे में पूछताछ की। किशोरी ने बताया कि अगस्त 2022 में घर के निकट रहनेवाले अमित सूर्यवंशी के

साथ प्यार हुआ था और बाहर दोनों अक्सर मिला भी करते थे। उस दौरान अमित के पड़ोस में रहनेवाले विकास महतो के माता-पिता जब गांव गए थे तब उसके घर में अमित

ने उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए थे। उस दौरान किशोरी विकास के संपर्क में आई और दोनों के बीच शारीरिक संबंध कायम हुए। शुक्रात में किशोरी के साथ विकास के शारीरिक संबंधों के बारे में अमित को कोई जानकारी नहीं थी लेकिन बाद में उसे भी पता चला गया। अमित और विकास के साथ शारीरिक संबंधों के कारण ही उसे गर्भ रहने की बात किशोरी ने अपने माता-पिता को बताई। जिसके बाद किशोरी के पिता ने सचिन जीआईडीसी पुलिस थाने में अमित और विकास के खिलाफ दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज करवा दी। जिसके आधार पर पुलिस ने आरोपी विकास को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है।

## पुलिस कस्टडी से दुष्कर्म का आरोपी फरार तीन पुलिसकर्मी सस्पेंड

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

अमरेली, राजूला में दुष्कर्म का एक आरोपी पुलिस कस्टडी से फरार हो गया। यह घटना उस समय हुई जब आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद पुलिस होटल में भोजन करने के लिए रखी थी। पुलिस अधीक्षक ने घटना के लिए जिम्मेदार तीन

पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया है। जानकारी के मुताबिक अमरेली जिले के राजूला में पोक्सो अपहरण और दुष्कर्म के आरोपी को कोर्ट में पेशी थी। कोर्ट कार्यवाही पूरी होने के बाद पुलिस आरोपी को लेकर जेल की ओर लौट रही थी। रास्ते में भोजन के लिए एक होटल पर पुलिस वैन रोकी गई। भोजन के बाद आरोपी

को जब वैन में बिठाया जा रहा था उस वक्त पुलिस की नजरें बचाकर वह फरार हो गया। हालांकि आरोपी के भागते ही पुलिस भी उसे पकड़ने के लिए दौड़ पड़ी। लेकिन आरोपी पुलिस के हाथ नहीं लगा। अमरेली पुलिस अधीक्षक ने ड्यूटी में लापरवाही बरतने पर तीन पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया है।

## गुजरात में अचानक बदले मौसम ने किसानों की बढ़ाई चिंता

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

गुजरात के कई हिस्सों में आज सुबह से मौसम का मिजाज बदलने से किसानों की चिंता बढ़ गई है। राजकोट समेत सौराष्ट्र के कई हिस्सों में आसमान में बादलों का जमावडा है जिसे देख बेमौसमी बारिश की आशंका है। अगर बेमौसमी बारिश होती है तो कृषि फसलों खासकर जौरे की

फसल को नुकसान हो सकता है। राज्य में पिछले तीन साल से टंड के मौसम में बेमौसमी बारिश होती रही है। इस साल भी अगर बारिश होती है आम की फसल को भी नुकसान हो सकता है। आसमान में बादलों के जमावडे से किसानों में चिंता व्याप्त है। दूसरी ओर दक्षिण गुजरात के सूरत में भी मौसम का मिजाज बदला हुआ है। सूरत में सुबह से सूर्यनारायण के दर्शन तक नहीं

हुए। ऐसा ही कुछ हाल दाहोद जिले में भी है। दो-तीन दिन पहले मौसम विभाग ने 13 जनवरी से गुजरात में फिर एक बार कड़ाके की टंड पड़ने की भविष्यवाणी की थी लेकिन वर्तमान मौसम को देखते हुए ऐसा लगता है। पिछले दो दिन से राज्य में तापमान में वृद्धि हो रही है। रात्रि को टंड जख्क लगती है परंतु दोपहर गर्मी का अहसास होता है।

## मुख्यमंत्री की उपस्थिति में गांधीनगर में 'मिलेट महोत्सव' मनाया गया

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

गांधीनगर,प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत के परम्परागत कृषि उत्पादों मिलेट्स (मोटे धान) की खेती व आहार में उसके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए की गई हिमायत की सफलता के चलते संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय किया है। इसके फलस्वरूप भारत सहित समस्त दुनिया के देशों में मिलेट की उपयोगिता के विषय में जनजागृति आणी। गुजरात में भी मिलेट्स का उपयोग बढ़ाने के लिए समग्र वर्ष के दौरान राज्य सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाने वाला है। इसी श्रृंखला में गुस्वार को मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में गांधीनगर में 'मिलेट महोत्सव' मनाया गया। पटेल ने इस मिलेट महोत्सव में राज्य के विभिन्न जिलों से आए किसान परिवारों के साथ संवाद किया। राज्य में मिलेट्स उत्पादक किसान मुख्यमंत्री आवास आयोजित में इस मिलेट महोत्सव में सहभागी



हुए। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर मिलेट्स उत्पादक किसानों के विभिन्न उत्पादों को देखा। महोत्सव में सभी उपस्थितों ने मिलेट्स से बने व्यंजनों का सेवन कर आनंद उठाया। भूपेंद्र पटेल ने मिलेट महोत्सव में अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमारे परम्परागत कृषि उत्पादों मोटे धान-मिलेट्स को विश्व स्तर पर प्रोत्साहन देने की सफलता संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) द्वारा अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष मनाए जाने की घोषणा से प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि अब तो पश्चिमी देश भी स्वास्थ्य के प्रति सजग हुए हैं और ऐसे

पौष्टिक मिलेट्स तथा प्राकृतिक खेती से उत्पादित अनाज का अधिक से अधिक उपयोग करने को प्रेरित हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष मनाए जाने से प्रधानमंत्री की यह संकल्पना साकार होगी कि विश्व के देश भी बाजरे ज्वार रागी मक्के जैसे हमारे परम्परागत धानों को अपनाएँ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने परम्परागत कृषि उत्पादों-मिलेट्स (मोटी धान फसलों) को विश्व भर में बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र में वर्ष 2023 को 'इयर ऑफ़ मिलेट्स' के रूप में मनाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। विश्व

के 70 से अधिक देशों द्वारा प्रधानमंत्री के इस प्रस्ताव को समर्थन दिए जाने से संयुक्त राष्ट्र की साधारण महासभा ने वर्ष 2023 को 'इटरनेशनल इयर ऑफ़ मिलेट्स' के रूप में मनाने की घोषणा की है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के प्रस्ताव के बाद अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 को मनाने का यह दूसरा प्रस्ताव है जिसमें प्रधानमंत्री का 'सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया' का भाव एवं 'वर्ल्ड हेल्थ एण्ड वेलनेस' की आकांक्षा समाहित है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष मनाने के लिए गुजरात सहित समग्र भारत वर्ष में मिलेट्स की खेती तथा मिलेट्स के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम होने वाले हैं। गुजरात में मिलेट्स का उपयोग बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में इस समग्र वर्ष के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इसके अंतर्गत राज्य के 8 महानगरों में 'मेगासिटी मिलेट एक्सपो' आयोजित होंगे जिससे शहरी क्षेत्रों में मिलेट्स के उपयोग को बढ़ावा मिलेगा और मिलेट्स उत्पादक किसानों

तथा उपभोक्तकों को कॉमन प्लेटफॉर्म मिलेगा। किसानों को मिलेट्स की खेती का प्रशिक्षण देने के लिए जिला स्तर पर 24 कार्यशिविर तथा तहसील स्तर पर 252 परिसंवाद आयोजित होंगे और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय में राज्य स्तरीय परिसंवाद आयोजित होगा। किसानों को लगभग 5150 क्विंटल ज्वार बाजरे व रागी के प्रमाणित बीजों का वितरण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त तहसील एवं ग्रामीण स्तर पर 210 स्थानों पर किसानों को क्राफिंग सिस्टम बेस्ड प्रशिक्षण दिया जाएगा।

यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है कि भारत में मिलेट्स यानी मोटे अनाज-धान की खेती सदियों से होती है। सिंधु घाटी सभ्यता-इंडस वेली में मिलेट्स की खेती तथा उसके आहार के सेवन से जुड़े प्रमाण मिले हैं। मिलेट्स यानी बाजरा ज्वार जौ रागी राजगीरा आदि मोटे धान अनेक पोषक तत्वों से भरपूर शक्तिशालक तथा पाचन में भी सहायक होते हैं। मिलेट्स के नियमित भोजन से रक्तचाप मधुमेह स्ट्रोक आँतों के कैंसर और अन्य गंभीर रोगों का जोखिम कम हो जाता है।

## अलग अलग स्कीमों में निवेश के नाम पर 28.78 करोड़ की ठगी आरोपी पिता गिरफ्तार बेटा फरार

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

सोफ्टवेयर डेवलपमेंट इन्वेस्टमेंट विद्यार्थियों को टेब्लेट समेत अलग अलग स्कीमों में निवेश पर तगड़े मुनाफे की लालच देकर रु 28.78 करोड़ से अधिक की ठगी किए जाने की अहमदाबाद के एक व्यापारी ने साइबर क्राइम में दर्ज कराई थी। इस मामले में अहमदाबाद साइबर क्राइम ने आरोपी पिता को गिरफ्तार कर लिया है जबकि उसका बेटा फरार है जिसकी तलाश जारी है। सूरत के वराछ क्षेत्र निवासी पिता-पुत्र वर्ष 2016 से सोफ्टवेयर कंपनी

चलाते हैं और कस्टमर से बैंक स्पे जमा करवाकर विद्यार्थियों को टेब्लेट देने निवेश में तगड़ा मुनाफा देने सोफ्टवेयर इन्वेस्टमेंट में इन्वेस्ट समेत अलग अलग स्कीमों में निवेश के बहाने लोगों को ठगा रहे थे। अहमदाबाद साइबर क्राइम में रु 28 करोड़ से अधिक की ठगी का मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने आरोपियों के उपयोग किए मोबाइल नंबर बैंक एकाउंट और आईएमआई इत्यादि की मदद से उनका पता हासिल किया है। जिसके बाद अहमदाबाद साइबर क्राइम ने सूरत क्राइम ब्रांच की मदद से आरोपी ठाकरसीभाई को गिरफ्तार कर लिया। हालांकि

उसका बेटा फरार है जिसकी तलाश पुलिस ने तेज कर दी है। पुलिस ने आरोपी का मोबाइल और कम्प्यूटर इत्यादि जब्त कर लिया है। ताकि यह पता लगाया जा सके कि आरोपियों ने अब तक निवेश के नाम पर कितने लोगों को ठगा है। आरोपियों ने अहमदाबाद के एक व्यापारी को सोफ्टवेयर डेवलपमेंट के निवेश पर 30 प्रतिशत से अधिक मुनाफे की लालच देकर रु 28 करोड़ 78 लाख 88 हजार 720 का चूना लगाया था। संभावना है कि आरोपियों के खिलाफ कई और शिकायतें पुलिस को मिल सकती हैं।

## अमेरिका से लौटे वृद्ध दंपति ने चाकू से हाथ और गला काटा पत्नी की मौत पति गंभीर

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

शहर के मकरवा अंडरपास के निकट ऑचिंड एक्जोटिका एपार्टमेंट निवासी वृद्ध दंपति के चाकू से हाथ और गला काट आत्महत्या की कोशिश से सनसनी फैल गई। इस घटना में 69 वर्षीय पत्नी की मौत हो गई। जबकि 73 वर्षीय वृद्ध को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उनकी स्थिति नाजुक बताई जा रही है। घटना के कारणों का फिलहाल पता नहीं चला है सरखेज पुलिस मामले की जांच शुरू की है। जानकारी के मुताबिक अहमदाबाद के मकरवा अंडरपास के निकट स्थित ऑचिंड एक्जोटिका

एपार्टमेंट में आज सुबह वृद्ध दंपति के आत्महत्या करने की सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई। एपार्टमेंट के बी ब्लॉक के सातवीं मंजिल पर रहने वाले किरणभाई भाऊ और उनकी पत्नी उषाबेन भाऊ लहलुहान हालत में पड़े थे। पुलिस ने तुरंत एम्ब्युलेंस को बुलाया। हालांकि अस्पताल पहुंचने से पहले ही उषाबेन भाऊकी मौत हो चुकी थी। जबकि किरणभाई भाऊ को गंभीर हालत में एसजी हाईवे के एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस की प्राथमिक जांच में पता चला कि वृद्ध दंपति ने चाकू से अपना गला

और हाथ काटकर आत्महत्या का प्रयास किया था। जिसमें पत्नी की मौत हो गई और पति गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना से पहले वृद्ध दंपति ने अपने भतीजे को मैसेज के जरिए आत्महत्या करने की जानकारी भी दी थी। हालांकि आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चला है। बताया जाता है कि वृद्ध दंपति पहले अमेरिका में रहता था और वहां से लौटने के बाद पहले अहमदाबाद के प्रहलादनगर में रहने लगा। पिछले चार महीने से ऑचिंड एक्जोटिका में वृद्ध दंपति निवास कर रहा था। दंपति के परिवार में और कौन-कौन है इसकी फिलहाल कोई जानकारी नहीं है।

## राज्यपाल की अध्यक्षता में गुजरात कैंसर सोसायटी की गवर्निंग काउंसिल की वार्षिक बैठक आयोजित

कोरोना काल में अपनी चिंता किए बगैर डॉक्टरों और हॉस्पिटल स्टाफ ने किया मरीजों का उपचार

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

अहमदाबाद, राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी की अध्यक्षता में गुस्वार को अहमदाबाद स्थित गुजरात कैंसर सोसायटी मेडिकल कॉलेज में गुजरात कैंसर सोसायटी की गवर्निंग काउंसिल सदस्यों की वार्षिक बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में गुजरात कैंसर सोसायटी के विभिन्न एजेंडों तथा गुजरात कैंसर सोसायटी के उपाध्यक्ष एवं गवर्निंग काउंसिल सदस्यों के नाम का प्रस्ताव भी रखा गया। इस अवसर पर राज्यपाल ने गुजरात कैंसर सोसायटी की गवर्निंग कमेटी काउंसिल सदस्यों तथा कर्मचारियों एवं हॉस्पिटल स्टाफ को कोरोना काल में दी गई उनकी सेवाओं के लिए बधाई दी। राज्यपाल ने कहा कि कोरोना काल में सभी



डॉक्टरों एवं हॉस्पिटल के स्टाफ ने अपनी एवं परिवार की चिंता किए बिना मरीजों का उपचार किया है और अनेक मरीजों को जीवनदान देने का काम किया है। राज्यपाल आचार्य

देवव्रत ने आगे कहा कि आज लोगों की जीवन शैली में आए बड़े बदलाव के कारण शरीर बीमारियों का घर बन रहा है। राज्यपाल ने कहा कि लोगों ने प्रकृति के सिद्धांत के विच्छ

अपनी जीवन शैली अपनाई है जिसके कारण आज बीमारियों लोगों को अपनी चपेट में लेती जा रही हैं। आयुर्वेद का उदाहरण देते हुए राज्यपाल ने कहा कि आयुर्वेद के अनुसार हमें उसी भोजन का सेवन करना चाहिए जो स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। किसानों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि आज किसान प्राकृतिक खेती की ओर मुड़ रहे हैं इससे आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ भोजन मिल सकेगा। राज्यपाल ने कहा कि आज मैंने पूरे गुजरात में प्राकृतिक खेती का अभियान शुरू किया है। इस अभियान के अंतर्गत अब तक लगभग ३ लाख किसानों को प्राकृतिक कृषि का प्रशिक्षण दिया गया है। इस अवसर पर गुजरात कैंसर सोसायटी के अध्यक्ष और वाइस चेयरमैन श्री पंकज पटेल ने कहा कि गुजरात कैंसर

सोसायटी मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल और रिसर्च सेंटर ने अपनी इतने वर्षों की याता में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। इस हॉस्पिटल में मरीजों की सेवा में अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और मेडिकल उपकरणों का इस्तेमाल किया जा रहा है। यहां मरीजों को कई तरह की थैरेपी सफलतापूर्वक दी जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत भी अनेक मरीजों ने इस हॉस्पिटल का लाभ उठाया है। गुजरात कैंसर सोसायटी ने जनजागृकता के अनेक कैंप भी आयोजित किए हैं। बैठक में पंकज पटेल ने कमेटी के सदस्यों को गुजरात कैंसर सोसायटी मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल और रिसर्च सेंटर के एजेंडे और भविष्य के नए आयोजनों के विषय में कई सुझाव एवं मार्गदर्शन भी दिया।

## मुख्यमंत्री ने स्वामी विवेकानंद जी के तैलचित्र के समक्ष भावपूर्ण पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

**क्रांति समय,सुरत**

www.krantisamay.com  
www.epaper.krantisamay.com

गांधीनगर,मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने गुस्वार को युवाओं के आदर्श तथा प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी की जन्मजयंती अर्थात् राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर गुजरात विधानसभा पोडियम में स्वामी विवेकानंद जी के तैलचित्र के समक्ष भावपूर्ण पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर विधानसभा उपाध्यक्ष जेठाभाई



भरवाड कैबिनेट मंत्री राघवजी पटेल बलवंतसिंह राजपूत कुवरजीभाई बावलिया भानुबेन बाबरिया तथा राज्य मंत्री मुकेशभाई पटेल प्रफुल्लभाई

पानशेरिया भिखुसिंह परमार विधायकों सहित कई अग्रणियों ने भी स्वामी विवेकानंद जी के तैलचित्र के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित की।